राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

क्रांति समय

कार्यालय ऑफिस
क्रांति समय दैनिक समाचार में
प्रेसनोट, नोटिस, वेपार संबंधित संपर्क करें
पता:- एस.टी.पी.आई-सुरत-395023
संपर्क नं.-7490923915
ईमेल:-info.krantisamay@gmail.com

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरांचल, उत्तराखंड, दिल्ली, हरियाणा में प्रकाशित

सुरत-गुजरात, संस्करण सोमवार 06 अप्रैल 2026 वर्ष-9,अंक-71 पृष्ठ-08 मूल्य-01 रूपये

Website : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

कूचबिहार में गरजे पीएम मोदी, टीएमसी के पापों का घड़ा भर चुका हैं........अब बदलाव की बयार

घुसपैठियों को सीधा टीएमसी का समर्थन

कोलकाता ।

बीजेपी के स्टार प्रचारक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव को लेकर कूचबिहार में रैली को संबोधित कर कहा कि राज्य में भ्रष्टाचार, घुसपैठ और महिलाओं के खिलाफ अत्याचार ने जनता को भय और असुरक्षा के माहौल में धकेल दिया है। पीएम मोदी ने कहा कि टीएमसी के पापों का घड़ा भर चुका है और अब बंगाल की जनता बदलाव चाहती है। चुनाव के बाद भ्रष्टाचारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई होगी, चुन-चुनकर हिसाब पूरा किया जाएगा और जनता का लूटा हुआ पैसा वापस कराया जाएगा। प्रधानमंत्री मोदी ने आरोप लगाया कि टीएमसी शासन में लोकतंत्र कमजोर हुआ है और संवैधानिक संस्थाओं की अनदेखी हो रही है।

उन्होंने संदेशखाली जैसी घटनाओं का जिक्र कर महिलाओं की सुरक्षा को बड़ा मुद्दा बताया।

पीएम मोदी ने कहा कि हमारा बंगाल एक समय भारत के सबसे बड़े विकसित राज्यों में शुमार था। विकास व्यापार उद्योग कला संस्कृति हर क्षेत्र में बंगाल आगे रखा था। लेकिन फिर बंगाल पर ग्रहण लग गया। पहले कांग्रेस का, फिर लेफ्ट का और अब टीएमसी का ग्रहण लग गया।

उन्होंने कहा कि इससे बंगाल की चमक फीकी पड़ती चली गई। पहले देश में एक सामान्य व्यक्ति औसतन जितना कमाते थे, बंगाल का मानुस उससे ज्यादा कमाता था। लेकिन अब बंगाल में भष्ट्राचार करने वाली सरकारों के कारण स्थिति उलट गई है। आज देश के अन्य राज्य विकास कर रहे हैं, लेकिन बंगाल पीछे होता जा रहा है। यहां से फैक्ट्रियां बाहर जा रही है। बंगाल के लोगों को पता है कि शिक्षक भर्ती घोटाला हुआ। टीएमसी के विधायक मंत्री पूरी सरकार इन घोटालों में शामिल थी।

कट, कमीशन और करप्शन से युवाओं के भविष्य से खिलवाड़ हुआ है।

जब भी चुनाव आता है, टीएमसी वाले झूठे वादे लेकर आते हैं। लेकिन हालात वैसे के वैसे ही बने हुए हैं। नरेंद्र मोदी ने कहा कि हमारा बंगाल शक्ति पूजा की धरती है। यहां आई सभी बहनों-बेटियो को बंगाल की हर बेटी से कहूंगा

बीजेपी आपके सम्मान और आपकी समृद्धि के लिए मैदान में है। बंगाल में बीजेपी की सरकार आएगी, तब महिला सशक्तिकरण का द्वार खोलेगी। इसकारण बहनों-बेटियों की पहली पंसद बीजेपी है।

पहला कॉलम

उत्तराखंडः शिक्षक भर्ती में अनियमितता बरतने वालों पर भड़की अदालत, नियुक्ति का रास्ता साफ

देहरादून।

उत्तराखंड हाईकोर्ट ने राज्य के शिक्षा विभाग में शिक्षकों की नियुक्ति प्रक्रिया में बरती गई गंभीर अनियमितताओं पर बेहद सख्त रुख अपनाया है। न्यायमूर्ति राकेश थपलियाल की एकलपीठ ने मामले की सुनवाई के दौरान चयन समिति की कार्यप्रणाली पर गहरा आश्चर्य व्यक्त किया। अदालत ने सवाल उठाया कि जब केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) और राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (एनसीटीई) ने कुछ अभ्यर्थियों को पहले ही अपात्र घोषित कर दिया था, तो चयन समिति ने उनकी योग्यता की गहन जांच किए बिना इतनी बड़ी संख्या में अपात्र लोगों की नियुक्ति की सिफारिश आखिर कैसे कर दी। यह पूरा मामला वर्ष 2016 की सहायक अध्यापक प्राथमिक भर्ती प्रक्रिया से जुड़ा है। उस समय कई योग्य अभ्यर्थियों को दरकिनार कर नियम विरुद्ध तरीके से अन्य लोगों को नियुक्तियां दे दी गई थीं। इसके खिलाफ विनय कुमार और 10 अन्य अभ्यर्थियों ने हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। याचिकाकर्ताओं का तर्क था कि वे पूरी तरह पात्र थे, लेकिन विभाग की लापरवाही और गलत चयन प्रक्रिया के कारण उन्हें उनके अधिकार से वंचित रखा गया। हाईकोर्ट ने अब शिक्षा निदेशालय को स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि पूर्व में नियुक्त शिक्षकों की सेवा में व्यवधान डाले बिना, इन 11 वंचित याचिकाकर्ताओं को समायोजित करने का समाधान निकाला जाए। उल्लेखनीय है कि अदालत के पिछले आदेशों के अनुपालन में विभाग ने नवंबर 2025 की नई विज्ञप्ति में इन अभ्यर्थियों के लिए 11 पद सुरक्षित रखे थे। हालांकि, सुनवाई के दौरान विभाग की ओर से तकनीकी पेंच फंसाने की कोशिश की गई। विभागीय सचिव ने उच्चतम न्यायालय के एक पुराने फैसले का हवाला देते हुए याचिकाकर्ताओं को बी.एड. डिग्री धारक होने के कारण अपात्र बताने का प्रयास किया। इस पर याचिकाकर्ताओं के अधिवक्ता ने कड़ा प्रतिवाद करते हुए कहा कि राज्य सरकार स्वयं पहले यह स्वीकार कर चुकी है कि ये अभ्यर्थी 2016 के विज्ञापन की शर्तों के अनुसार पूरी तरह पात्र थे। हाईकोर्ट ने इस दोहरे रवैये पर नाराजगी जताते हुए सरकार को एक सप्ताह के भीतर इस समस्या का उचित समाधान निकालने का अंतिम अवसर दिया है। अदालत ने साफ कर दिया है कि योग्य अभ्यर्थियों के साथ अन्याय बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। अब इस मामले की अगली सुनवाई 8 अप्रैल 2026 को होनी तय हुई है, जिसमें सरकार को अपनी कार्ययोजना प्रस्तुत करनी होगी। इस फैसले से उन अभ्यर्थियों में न्याय की उम्मीद जगी है जो पिछले एक दशक से व्यवस्था की खामियों के कारण संघर्ष कर रहे थे।

सांबा में संदिग्ध गतिविधि के बाद सेना का सर्च ऑपरेशन तेज

दारुई इलाके में तीन अज्ञात लोगों के दिखने से सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट

जम्मू ।

सांबा जिले में संदिग्ध गतिविधि की सूचना मिलने के बाद रविवार को सुरक्षा बलों ने बड़े स्तर पर सर्च ऑपरेशन शुरू कर दिया। यह अभियान उस समय शुरू हुआ जब दारुई इलाके के बेध खड़ क्षेत्र के एक स्थानीय निवासी ने तीन अज्ञात व्यक्तियों को देखने की जानकारी दी। प्रत्यक्षदर्शी के अनुसार, ये तीनों संदिग्ध अंधेरे का फायदा उठाते हुए एक सूखे नाले के किनारे-किनारे आगे बढ़ रहे थे। इनमें से एक व्यक्ति के पास भारी बैगपैक था, जिससे उनकी गतिविधि पर शक और गहरा गया। हालांकि, प्रत्यक्ष रूप से उनके पास कोई हथियार दिखाई नहीं दिया, फिर भी इलाके में संभावित खतरे को देखते हुए सतर्कता बढ़ा दी गई है। इस आशय की सूचना मिलते ही पुलिस के स्पेशल ऑपरेशंस ग्रुप (एसओजी) ने तुरंत कार्रवाई करते हुए सेना और अर्धसैनिक बलों के साथ संयुक्त सर्च ऑपरेशन शुरू किया। पूरे इलाके को घेरकर संदिग्धों की तलाश की जा रही है। सुरक्षा एजेंसियां जंगलों, नालों और आसपास के गांवों में गहन तलाशी अभियान चला रही हैं, ताकि किसी भी संभावित खतरे को समय रहते निष्क्रिय किया जा सके। अधिकारियों के मुताबिक, अभी तक इन संदिग्ध व्यक्तियों के साथ कोई सीधा संपर्क नहीं हो पाया है। बावजूद इसके, ऑपरेशन को पूरी गंभीरता के साथ जारी रखा गया है और इलाके में निगरानी बढ़ा दी गई है। स्थानीय लोगों को भी सतर्क रहने और किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तुरंत पुलिस को देने के लिए कहा गया है। सुरक्षा बलों का कहना है कि सीमा से सटे क्षेत्रों में इस तरह की घटनाओं को गंभीरता से लिया जाता है, क्योंकि ये घुसपैठ या अन्य आतंकी गतिविधियों से जुड़ी हो सकती हैं। फिलहाल, पूरे क्षेत्र में हाई अलर्ट घोषित कर दिया गया है और सर्च ऑपरेशन जारी है।

10 को राज्यसभा सदस्य की शपथ लेंगे नीतीश, जल्द सामने आएगा बिहार सीएम का नाम

पटना ।

बिहार की राजनीति में एक अहम और सकारात्मक मोड़ आने वाला है। सीएम नीतीश कुमार 10 अप्रैल को राज्यसभा सदस्य के रूप में शपथ लेंगे। बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष संजय सरावगी ने रविवार को यह जानकारी देते हुए कहा कि शपथ ग्रहण के बाद एनडीए का केंद्रीय नेतृत्व और खुद नीतीश कुमार मिलकर आगे की रणनीति तय करेंगे। इस पूरे घटनाक्रम के बाद बिहार में नई सरकार के गठन और नए सीएम के नाम को लेकर चल रही चर्चाओं को भी जल्द विराम मिलने की उम्मीद है।

राजनीतिक गलियारों में कई नामों पर मंथन जारी है, लेकिन अब फैसले की घड़ी नजदीक मानी जा रही है। आने वाले दिनों में राज्य को नया नेतृत्व मिल सकता है, जिससे शासन-प्रशासन में तेजी और स्पष्टता आने की उम्मीद है।

सीएम नीतीश कुमार ने 2005 में बिहार की कमान संभाली। तब से कुछ महीनों को छोड़कर वे लगातार सीएम बने हुए हैं। जब राज्‍यसभा चुनाव का समय था तो उन्होंने दिल्ली जाने का फैसला कर सबको चौंका दिया। उनसे अब भी फैसले पर पुनर्विचार का आग्रह किया जा रहा है। हालांकि अब वे राज्‍यसभा के लिए चुने

जा चुके हैं। इसके बाद उनके शपथ ग्रहण पर सबकी नजरें टिकी हुई थीं। अब वह स्थिति स्पष्ट कर दी गई है।

बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन, रालोमो के राष्‍ट्रीय अध्‍यक्ष उपेंद्र कुशवाहा, केंद्रीय मंत्री रामनाथ ठाकुर और शिवेश कुमार भी निर्वाचित हुए हैं। ऐसे में अब उम्मीद जताई जा रही है कि बीजेपी का सीएम होगा। हालांकि जदयू की ओर से कई नेताओं ने सीएम के पुत्र निशांत के हाथों में राज्‍य की कमान सौंपने की मांग की है उनके समर्थन में जगह-जगह पोस्टर भी लगाए जा रहे हैं।

अमेरिका-ईरान टेंशनः ट्रंप के शीर्ष अधिकारियों पर बड़ा बदलाव और ईरान का तंज

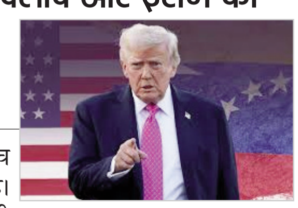

नइ दिल्ली ।

अमेरिका और ईरान के बीच पिछले एक महीने से जंग जारी है। इस बीच अमेरिका के अंदर भी राजनीतिक और सैन्य नेतृत्व में बड़े बदलाव हुए हैं। अमेरिकी सेना के शीर्ष अफसरों और अटॉर्नी जनरल के हटने ने अमेरिका की कमजोरी को उजागर किया, जबकि ईरान ने इसका मजाक उड़ाकर वैश्विक मंच पर अमेरिका की छवि को चुनौती दी। गुरुवार को अमेरिकी थल सेना के प्रमुख जनरल रैंडी जॉर्ज को अचानक हटाया गया। उनका कार्यकाल अभी एक साल से अधिक बाकी था। रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ ने उन्हें तुरंत रिटायर करा दिया। इससे पहले वायुसेना प्रमुख जनरल सीक्यू ब्राउन, नौसेना प्रमुख और वायुसेना के उप प्रमुख को भी हटा दिया गया था। विशेषज्ञ मानते हैं कि यह कदम ईरान में जमीनी लड़ाई के विरोध के कारण उठाया गया। सिर्फ सैन्य ही नहीं, अमेरिका की शीर्ष कानूनी अधिकारी अटॉर्नी जनरल पैम बोंडी को भी हटा दिया गया। उन पर बड़े मामलों के कागजात सही तरीके से संभालने में चूक का आरोप था। ईरान ने साउथ अफ्रीका स्थित अपने दूतावास से अमेरिकी सैन्य नेताओं की बैठक की फोटो साझा की, जिसमें कुछ चेहरों पर निशान लगाए गए और संदेश था, रिजीम चेंज सफलतापूर्वक हो गया। इसके साथ ट्रंप का नारा मेगा और हंसने वाला इमोजी भी था। अमेरिका की 82वीं एयरबोर्न डिवीजन के हजारों सैनिक मिडिल ईस्ट पहुंच रहे हैं। नौसेना और वायुसेना पहले से ही हमले कर रही हैं। अमेरिका के भीतर सवाल उठ रहे हैं कि ट्रंप ईरान में सरकार बदलने की बात कर रहे हैं, लेकिन अपनी सेना और कानूनी अधिकारियों के शीर्ष पदों में लगातार बदलाव कर रहे हैं।

सीएम सरमा का बड़ा दावा........बीजेपी 100 सीटों के करीब जीतेगी

जोरहाट में भव्य रोड शो में उमड़ी भारी भीड़

जोरहाट ।

असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने एक ऐसा दावा कर दिया जिससे राज्य में चुनावी माहौल तेजी से गरमा गया है। दरअसल जोरहाट शहर में आयोजित एक विशाल रोड शो के दौरान मुख्यमंत्री सरमा ने बड़ा दावा करते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी आगामी विधानसभा चुनाव में 90 से 100 सीटें जीत सकती है।

यह रोड शो दोस एंड को चरियाली से लेकर बरुआह चरियाली तक निकाला गया, जिसमें लोगों की भारी भीड़ उमड़ी। रैली के चलते शहर के कई प्रमुख मार्गों पर घंटों तक जाम की स्थिति बनी रही। यह रोड शो हितेंद्र नाथ गोस्वामी के समर्थन में आयोजित किया गया था, जो गौरव गोगोई के खिलाफ चुनाव मैदान में हैं। रोड शो के बाद मुख्यमंत्री सरमा ने नेहरू पार्क चरियाली में एक जनसभा को संबोधित किया। अपने भाषण में उन्होंने जोरहाट की जनता का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि राज्य में कई विकास परियोजनाएं चल रही हैं, जिनमें पेयजल योजनाएं प्रमुख हैं।

उन्होंने काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान

के पास प्रस्तावित एलिवेटेड कॉरिडोर का भी जिक्र किया और कहा कि इसके बनने से जोरहाट और गुवाहाटी के बीच यात्रा समय लगभग एक घंटे तक कम हो जाएगा। उन्होंने मतदाताओं से अपील की कि वे विकास के मुद्दे को ध्यान में रखकर वोट दें। चुनावी नतीजों को लेकर आत्मविश्वास जताते हुए सरमा ने कहा कि जनता का भारी समर्थन भाजपा की जीत सुनिश्चित करेगा।

ईरान-इजरायल युद्ध का असरः मुंबई में सूखे मेवे हुए 25-30 प्रतिशत महंगे

मुंबई ।

पश्चिम एशिया में ईरान और इज़रायल के बीच जारी युद्ध का असर अब भारत के बाजारों में साफ दिखाई देने लगा है। खासकर मुंबई में सूखे मेवों (ड्रायफ्रूट्स) की कीमतों में भारी उछाल दर्ज किया गया है। अंतरराष्ट्रीय परिवहन प्रभावित होने के कारण बदाम, पिस्ता, खजूर और मनुका जैसे उत्पाद 25 से 30 प्रतिशत तक महंगे हो गए हैं। मुंबई के सबसे बड़े थोक बाजार महात्मा फुले मंडई (क्रॉफर्ड मार्केट) के व्यापारियों के अनुसार सूखे मेवों के दाम में 400 रुपया से 500 रुपया प्रति किलो तक की बढ़ोतरी हुई है यानि कुल मिलाकर कीमतों में 25-30 प्रतिशत का इजाफा हुआ है। बढ़ती कीमतों के चलते बाजार में मांग 25-30 प्रतिशत तक घट गई है। बताया गया है कि ईरान और अफगानिस्तान से आने वाले माल की सप्लाई कम हो गई है। अंतरराष्ट्रीय शिपिंग रूट्स पर असर पड़ने से जहाजों की आवाजाही धीमी हो गई है।

सरकार ने की अपीलः पैनिक न हों देश में ईंधन की कोई कमी नहीं है, अफवाहों से बचें

नई दिल्ली ।

पश्चिम एशिया में जारी तनाव और अमेरिका-ईरान युद्ध के कारण होर्मुज स्ट्रेट में उत्पन्न बाधाओं के बीच, भारत सरकार ने देशवासियों को आश्वस्त किया है कि देश में ईंधन की आपूर्ति पूरी तरह सुरक्षित और सुचारू है।

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय ने एक आधिकारिक बयान जारी कर नागरिकों से पेट्रोल, डीजल और एलपीजी की पैनिक बाइंग यानी घबराहट में खरीदारी न करने की पुरजोर अपील की है। सरकार ने भरोसा दिलाया है कि पेट्रोलियम उत्पादों से लेकर कुकिंग गैस तक की उपलब्धता बिना किसी रुकावट के बनी हुई है।

मंत्रालय ने स्पष्ट किया कि सरकार घरेलू एलपीजी और पाइप्ड नेचुरल गैस की आपूर्ति को घरों, अस्पतालों और अन्य आवश्यक सेवाओं के लिए प्राथमिकता के आधार पर सुनिश्चित कर रही है। रिफाइनरी उत्पादन बढ़ाकर मांग को नियंत्रित करने के लिए विशेष उपाय लागू किए गए हैं, जिसमें एलपीजी रिफिलिंग के अंतराल को व्यवस्थित करना भी शामिल है।

सरकार ने लोगों से आग्रह किया है कि वे केवल आधिकारिक जानकारी पर ही भरोसा करें और ऊर्जा संरक्षण पर ध्यान दें।ईंधन की कालाबाजारी और अवैध जमाखोरी को रोकने के लिए सरकार सख्त कदम उठा रही है। जारी रिपोर्ट के अनुसार, अब तक देश भर में 3,700 से अधिक ठिकानों पर छापेमारी की गई है।

इस कार्रवाई के तहत नियमों का उल्लंघन करने वाले एलपीजी वितरकों को लगभग 1,000 कारण बताओ नोटिस जारी किए गए हैं और अब तक 27 डीलरों के लाइसेंस निलंबित किए जा चुके हैं।

सरकार ने साफ कर दिया है कि संकट का फायदा उठाने की कोशिश करने वालों को बख्शा नहीं जाएगा।

मंत्रालय द्वारा पेश किए गए आंकड़ों के मुताबिक, भू-राजनीतिक तनाव के बावजूद वितरण केंद्रों पर एलपीजी की कमी की कोई रिपोर्ट दर्ज नहीं हुई है। बीते शुक्रवार को ही देशभर में करीब 51 लाख एलपीजी सिलेंडर बांटे गए, जिनमें से 95 प्रतिशत

मांग ऑनलाइन बुकिंग के जरिए पूरी की गई। एहतियात के तौर पर कमर्शियल एलपीजी सिलेंडर की सप्लाई को फिलहाल 70 प्रतिशत तक सीमित किया गया है और विकल्प के रूप में केरोसिन व कोयले जैसे ईंधन के इस्तेमाल को बढ़ावा दिया जा रहा है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

पाँच राज्यों के विधान सभा के चुनावी समरक्षेत्र में जनादेश की आहट

बिनोद कुमार सिंह

इस चुनावी महासमर में सबसे बड़ी शक्ति जनता ही है।वही इस लोकतांत्रिक व्यवस्था की वास्तविक धुरी है,जिसके एक वोट से सत्ता का संतुलन बदल सकता है।यह चुनाव केवल सरकार चुनने का अवसर नहीं, बल्कि अपने भविष्य और अपने अधिकारों को दिशा देने का माध्यम है।पाँच राज्यों में सत्ता का संघर्ष और लोकतंत्र की अग्निपरीक्षा की घड़ी ,जनता जनार्दन मौन है।राज्यों के मतदाताओं ने अपने मन में जो निर्णय लिया है,वह शीघ्र ही मतपेटियों के माध्यम से सामने आएगा और उसी के आधार पर तय होगा कि सत्ता का ताज किसके सिर सजेगा।

पाँच राज्यों में सता के सिंघासन पर कौन,राजनीतिक संघर्ष और लोकतंत्र की अग्निपरीक्षा की घड़ी,जनता जनार्दन है मौन...

भारत का लोकतंत्र केवल एक शासन प्रणाली नहीं,बल्कि एक जीवंत परंपरा है,जहाँ प्रत्येक चुनाव जनभावनाओं का उत्सव बनकर सामने आता है।वर्ष 2026 में पाँच राज्यों- असम,तमिलनाडु,केरल, पश्चिम बंगाल और मणिपुर-के चुनाव इसी लोकतांत्रिक परंपरा के निर्णायक अध्याय बनकर उभरे हैं। यह केवल सत्ता परिवर्तन का अवसर नहीं,बल्कि पिछले पाँच वर्षों के कार्यों,वादों और जनता के विश्वास की अग्नि परीक्षा की घड़ी आ गई है।इन राज्यों की जनता ने बीते वर्षों में विकास,महंगाई, रोजगार,शिक्षा,स्वास्थ्य और कानून-व्यवस्था जैसे मुद्दों को नजदीक से महसूस किया है।अब जब चुनावी शंखनाद हो चुका है,राज्यों के मतदाता अपने मन में एक ठोस निर्णय बना चुका है।वह यह तय करने की स्थिति में है कि कौन उसके सपनों का संवाहक है और कौन केवल राजनीतिक वादों का व्यापारी है।भारतीय लोकतंत्र का सबसे बड़ा परिवर्तन यह है कि मतदाता अब पहले से कहीं अधिक सजग, जागरूक और निर्णायक हो गया है।वह जातीय और धार्मिक सीमाओं से ऊपर उठकर सुशासन और विकास को प्राथमिकता देने लगा है।यही कारण है कि इस बार 5 राज्यों के विधान सभा चुनावों में पारंपरिक समीकरणों के साथ-साथ प्रदर्शन आधारित राजनीति भी प्रमुख भूमिका में दिखाई दे रही है। चुनावी मैदान आज एक ऐसे समरक्षेत्र में बदल चुका है,जहाँ सत्तारूढ़ राजनीतिक दल अपनी उपलब्धियों के रथ पर सवार है, वहीं विपक्ष असंतोष और सवालों के शस्त्र लेकर चुनावी मैदान में उतरा है।

अगर हम राजनीतिक परिदृश्य पर एक दृष्टि डालें तो हर राज्य की परिस्थितियाँ भिन्न होते हुए भी एक समानता स्पष्ट दिखाई देती है - सत्ता और विपक्ष के बीच सीधा और तीखा संघर्ष का दौर जारी है।सत्तारूढ़ दल अपने कार्यकाल के दौरान किए गए बुनियादी ढांचे के विकास,कल्याणकारी योजनाओं और प्रशासनिक सुधारों को जनता के सामने रख रहा है। 'डबल इंजन' जैसे राजनीतिक नारे और योजनाओं का लाभ उठाने वाला वर्ग उसके समर्थन का मजबूत आधार बन चुका है।वही दूसरी ओर विपक्ष महंगाई,बेरोजगारी,किसान संकट और सामाजिक असमानता जैसे मुद्दों को लेकर सरकार को घेरने में जुटा है और जनता को परिवर्तन के लिए प्रेरित कर रहा है।

यदि इन पाँच राज्यों के चुनावी परिदृश्य को गहराई से देखा जाए, तो एक बहुआयामी तस्वीर सामने आती है।असम में सत्ता पक्ष अपने मजबूत संगठन और नेतृत्व के कारण हल्की बढ़त बनाए हुए है। यहाँ उसे लगभग 44 से 48 प्रतिशत वोट मिलने की संभावना है,जबकि विपक्ष 40 से 43 प्रतिशत के बीच सिमट सकता है।सीटों के रूपांतरण में यह अंतर सत्ता पक्ष को बढ़त दिला सकता है,जहाँ 126 सदस्यीय विधानसभा में उसके 68 से 78 सीटों तक पहुँचने के संकेत मिलते हैं।इसके बावजूद मुकाबला पूरी तरह एकतरफा नहीं है और विपक्ष की चुनौती मजबूत बनी हुई है।वही तमिलनाडु में राजनीति अपने पारंपरिक द्रविड़ स्वरूप में ही दिखाई देती है,जहाँ डीएमके गठबंधन लगभग 42 से 46 प्रतिशत वोट हासिल कर स्पष्ट बढ़त की स्थिति में नजर आता है। एआईएडीएमके गठबंधन 34 से 38 प्रतिशत के बीच सीमित रह सकता है,जबकि अन्य दलों का प्रभाव सीमित दायरे में रहेगा।234 सदस्यीय विधानसभा में डीएमके गठबंधन 140 से 160 सीटों के साथ सशक्त स्थिति में उभर सकता है,जो यह स्पष्ट संकेत देता है कि वहाँ सत्ता की निरंतरता संभव है। केरल की राजनीति हमेशा से विचारधारात्मक संघर्ष और वैकल्पिक सत्ता परिवर्तन के लिए जानी जाती रही है,लेकिन इस बार स्थिति थोड़ी भिन्न दिखाई देती है। एलडीएफ 43 से 46 प्रतिशत वोट के साथ बढ़त बनाए हुए है,जबकि यूडीएफ 41 से 44 प्रतिशत के बीच मुकाबले में बना हुआ है।140 सीटों वाली विधानसभा में एलडीएफ को 70 से 80 सीटों तक पहुँचने का अनुमान है,जो यह संकेत देता है कि परंपरागत ट्रेंड के विपरीत सत्ता की पुनरावृत्ति संभव हो सकती है।पश्चिम बंगाल का चुनावी परिदृश्य सबसे अधिक तीव्र और ध्रुवीकृत दिखाई देता है।यहाँ टीएमसी 44 से 47 प्रतिशत वोट के साथ आगे है,जबकि भाजपा 38 से 42 प्रतिशत के बीच मजबूत चुनौती दे रही है।294 सीटों वाली विधानसभा में टीएमसी को 160 से 190 सीटें मिलने की संभावना है,जबकि भाजपा 90 से 120 सीटों के बीच रह सकती है।यह परिणाम दर्शाता है कि सत्ता पक्ष को बढ़त तो है,लेकिन विपक्ष भी निर्णायक उपस्थिति दर्ज कर रहा है। जहाँ तक केंद्र शासित जहाँ तक मणिपुर की बात है तो मणिपुर में राजनीतिक समीकरण अधिक जटिल और स्थानीय प्रभावों पर आधारित हैं।यहाँ भाजपा 36 से 40 प्रतिशत वोट के साथ सबसे बड़े दल के रूप में उभर सकती है, जबकि कांग्रेस 30 से 34 प्रतिशत के बीच रह सकती है।क्षेत्रीय दलों का 20 से 25 प्रतिशत वोट इस चुनाव को त्रिशंकु स्थिति की ओर ले जा सकता है।60 सदस्यीय विधान सभा में किसी एक दल को स्पष्ट बहुमत मिलना कठिन प्रतीत होता है और गठबंधन की राजनीति यहाँ निर्णायक भूमिका निभा सकती है।इन सभी 5 राज्यों के समेकित विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय चुनावी समीकरण में वोट प्रतिशत और सीटों का अनुपात हमेशा सीधा नहीं होता।कई बार केवल 2 से 3 प्रतिशत वोट का अंतर दर्जनों सीटों का अंतर बना देता है,जो सत्ता की दिशा बदलने में निर्णायक साबित होता है।ऐसे में क्षेत्रीय दल अभी भी कई राज्यों में राजनीति के केंद्र में हैं और राष्ट्रीय दलों के लिए चुनौती बने हुए हैं।गठबंधन राजनीति का प्रभाव असम और मणिपुर जैसे राज्यों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है,जबकि तमिलनाडु,केरल और पश्चिम बंगाल में क्षेत्रीय नेतृत्व की पकड़ मजबूत बनी हुई है।

अगर हम चुनावी मुद्दों की बात करें तो महंगाई,रोजगार,कृषि संकट, युवा आकांक्षाएँ और महिला सशक्तिकरण जैसे विषय हर राज्य में गूंज रहे हैं।कोविड के बाद स्वास्थ्य और शिक्षा भी प्रमुख मुद्दों के रूप में उभरे हैं।इसके साथ ही सोशल मीडिया ने चुनावी परिदृश्य को पूरी तरह बदल दिया है। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर चल रहा प्रचार और संवाद अब चुनावी रणनीति का अभिन्न हिस्सा बन चुका है।इन चुनावों का प्रभाव केवल इन राज्यों तक सीमित नहीं रहेगा,बल्कि यह राष्ट्रीय राजनीति की दिशा भी तय करेगा।वर्ष 2029 के लोकसभा चुनाव की दृष्टि से इसे एक प्रकार का सेमीफाइनल माना जा रहा है।यदि सत्तारूढ़ दल इन चुनावों में अच्छा प्रदर्शन करता है, तो उसकी राष्ट्रीय स्थिति और मजबूत होगी।वहीं विपक्ष के लिए यह अवसर है कि वह अपनी रणनीति को धार देकर आगामी चुनावों के लिए मजबूत आधार तैयार करे।

संक्षेप में, इस चुनावी महासमर में सबसे बड़ी शक्ति जनता ही है।वही इस लोकतांत्रिक व्यवस्था की वास्तविक धुरी है,जिसके एक वोट से सत्ता का संतुलन बदल सकता है।यह चुनाव केवल सरकार चुनने का अवसर नहीं, बल्कि अपने भविष्य और अपने अधिकारों को दिशा देने का माध्यम है।पाँच राज्यों में सत्ता का संघर्ष और लोकतंत्र की अग्निपरीक्षा की घड़ी ,जनता जनार्दन मौन है।राज्यों के मतदाताओं ने अपने मन में जो निर्णय लिया है,वह शीघ्र ही मतपेटियों के माध्यम से सामने आएगा और उसी के आधार पर तय होगा कि सत्ता का ताज किसके सिर सजेगा।

चुनावी समरक्षेत्र में शंखनाद हो चुका है,रथ सज चुके हैं और राजनीतिक योद्धा मैदान में उतर चुके हैं।अब सबकी निगाहें उस अंतिम निर्णय पर टिकी हैं,जो जनता जर्नादन के हाथों में है।वही निर्णय आने वाले समय की राजनीति की दिशा तय करेगा और इतिहास के पन्नों में दर्ज होगा कि किसने जनादेश को समझा और किसे आत्ममंथन की राह चुननी पड़ी।

संपादकीय

जंग जारी रहेगी

राष्ट्रपति ट्रंप ने अमरीका को संबोधित करते हुए यह निष्कर्ष दिया है कि अभी ईरान के खिलाफ जंग जारी रहेगी। आगामी 2-3 हफ्ते में ईरान पर भीषण हमला किया जाएगा। हम जल्द ही अपने लक्ष्य हासिल कर लेंगे। जो जीत हम हासिल कर रहे हैं, दुनिया ने ऐसी जीत कभी नहीं देखी होगी! राष्ट्रपति ट्रंप ने फिर पुराना मुहावरा दोहराया कि हमने ईरान की वायुसेना, नौसेना, मिसाइल-ड्रोन क्षमताएं नष्ट कर दी हैं। यहां तक कि उसके परमाणु ठिकाने भी तबाह कर दिए हैं। अब ईरान परमाणु बम नहीं बना सकता। ईरान के सभी बड़े नेता मार दिए गए हैं। यदि ईरान परमाणु बम बना लेता, तो वह अमरीका-इजरायल के लिए मौत साबित होता! दरअसल जो गलतियां पुराने राष्ट्रपतियों ने की थीं, मैं उन्हें ठीक कर रहा हूं। इस संदर्भ में राष्ट्रपति ट्रंप ने खुलासा किया कि द्वितीय विश्व युद्ध 3 साल 8 माह से अधिक और वियतनाम युद्ध 19 साल से अधिक लड़े गए थे। ईरान युद्ध को अभी 32-33 दिन ही बीते हैं और हमने लगभग लक्ष्य पूरे कर लिए हैं। राष्ट्रपति ट्रंप ने यह भी दोहराया कि अमरीका युद्ध खत्म करने के बेहद करीब है। हमारी अर्थव्यवस्था बेहतर स्थिति में है। गैस उत्पादन में अमरीका ह्यनंबर वनह्ण है। हमें तेल के लिए होर्मुज स्ट्रेट की जरूरत नहीं है। जिन्हें तेल-गैस की किल्लत है, जरूरत है, वे खुद होर्मुज जाएं। अलबत्ता हमसे तेल खरीदें, क्योंकि अमरीका के पास बहुत कच्चा तेल है। बहरहाल राष्ट्रपति ट्रंप ने अपने राष्ट्रीय संबोधन का सारांश यह दिया है कि ईरान के खिलाफ जंग जारी रहेगी। गौरतलब यह है कि अमरीका ईरान युद्ध पर अभी तक करीब 3.50 लाख करोड़ रुपए खर्च कर चुका है और उसने 200 अरब डॉलर (करीब 19 लाख करोड़ रुपए) का अतिरिक्त बजट मांगा है, लेकिन अमरीकी कांग्रेस फिलहाल उसे पारित करने के मूड में नहीं है। अमरीका का युद्ध पर हररोज का औसतन खर्च 9400 करोड़ रुपए का है। अमरीका में पेट्रोल के दाम 4.06 डॉलर प्रति गैलन के स्तर को छू चुके हैं। इस पर ही हाहाकार मचा है, क्योंकि यह बढ़ोतरी अभूतपूर्व है। ईरान में महंगाई दर 50.6 फीसदी है। यह अकल्पनीय है। अनाज की कीमतें 140 फीसदी और डेयरी उत्पादों की कीमतें 117 फीसदी बढ़ गई हैं। एक किलो चावल के दाम 20 लाख रियाल और दाल की कीमत 35 लाख रियाल है। रोजमर्रा की सभी वस्तुओं की कीमतें आसमान छू रही हैं। वस्तुओं की उपलब्धता ही सवालिया है। क्या राष्ट्रपति ट्रंप का कोई वैश्विक सरोकार नहीं है? इजरायल की अर्थव्यवस्था का तो कचूमर निकल चुका है। वह तो 1.20 करोड़ की आबादी का छोटा-सा देश है। इजरायल को हर हफ्ते 1.6 अरब डॉलर खर्च करने पड़ रहे हैं। प्रधानमंत्री नेतन्याहू के खिलाफ अब जनता सडकों पर उतर आई है। यदि भारत का उल्लेख करें, तो करीब 55 लाख भारतीयों को खाड़ी देश छोड़ कर भारत लौटना पड़ा है। दुबई की अति सुरक्षित वाली छवि भी खंडित हुई है। खाड़ी देशों से आधे से अधिक भारतीय लौट आए हैं। इससे नया आर्थिक संकट सामने होगा। कुवैत से 20 भारतीयों के शव केरलम के कोच्चि अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट पर लाए गए हैं। वे युद्ध और हादसों के शिकार हुए हैं।

चिंतन-मनन

अज्ञान का आवरण

गुरू के पास डंडा था। उस डंडे में विशेषता थी कि उसे जिधर घुमाओ, उधर उस व्यक्ति की सारी खामियां दिखने लग जाएं। गुरू ने शिष्य को डंडा दे दिया। कोई भी आता, शिष्य डंडा उधर कर देता। सब कुरूप-ही-कुरूप सामने दीखते। अब भीतर में कौन कुरूप नहीं है? हर आदमी कुरूप लगता। किसी में प्रोध ज्यादा, किसी में अहंकार ज्यादा, किसी में घृणा का भाव, किसी में ईर्ष्या का भाव, किसी में द्वेष का भाव, किसी में वासना, उत्तेजना। हर आदमी कुरूप लगता। बड़ी मुसीबत, कोई भी अच्छा आदमी नहीं दिख रहा है।

उसने सोचा, गुरूजी को देखूं, कैसे हैं? गुरू को देखा तो वहां भी कुरूपता नजर आई। गुरू के पास गया और बोला कि महाराज! आप में भी यह कमी है। गुरू ने सोचा कि मेरे अस्त्र का मेरे पर ही प्रयोग! गुरू आखिर गुरू था। उसने कहा कि डंडे को इधर-उधर घुमाते हो, कभी अपनी ओर भी जरा घुमाओ। घुमाकर देखा तो पता चला कि गुरू में तो केवल छेद ही थे, यहां तो बड़े-बड़े गड्ढे हैं। वह बड़े असमंजस में पड़ गया।

कहने का अर्थ यह कि हमारी इन्द्रियों की शक्ति सीमित है। दूर की बात नहीं सुन पाते। भीतर की बात नहीं देख पाते। बहुत अच्छा है, अगर कान की शक्ति बढ़ जाए तो आज की दुनिया में इतना कोलाहल है कि नींद लेने की बात ही समाप्त हो जाएगी। देखने की शक्ति बहुत पारदर्शी बन जाए तो इतने बीभत्स दृश्य हमारे सामने आएंगे कि फिर आदमी का जीना ही मुश्किल हो जाएगा। कुरूपता तो चेतना के भीतर होती है। प्रकृति की विशेषता है कि हमारा अज्ञान का आवरण टूट नहीं पा रहा है।

युद्ध नहीं शान्ति से मानवता की रक्षा हेतु सयंम जरुरी

संजय गोस्वामी

आज पूरे मीडिया में यूएस- इजराइल और ईरान के युद्ध के 1महीने से ऊपर का समाचार देख देख कर शान्ति भंग हो रही अब तो इस बहस में राजनेता भी अपनी सफाई दे रहें हैं जो राज्यसभा के सांसद भी हैं डिफेन्स एक्सपर्ट का तो समझा जा सकता है लेकिन राजनीती पार्टियों में इस पर बहस करना बिलकुल गलत है इसलिए इसपर किसी भी प्रकार के बयानबाजी से परहेज करना चाहिए कौन आतंकवादी पाल रहा है कौन मिट्टी में मिला देगा इससे अपने को क्या लेना देना अमेरिका के कुछ विमान युद्ध में गिरे और 1पायलेट को वहाँ से निकाल भी लिया तो उसकी ताकत समझ में नहीं आ रही है ईरान मिसायल और ड्रोन से अटैक कर रहा है जहाँ अमेरिका और इजराइल की भीषण बमबारी हो रही है वहाँ यदि जाने गईं है तो निर्दोष नागरिकों की अधिक संख्या है ईरान पर अमेरिका के आर्थिक बैन के बाद ना तो कोई लड़ाकू विमान नजर आए ना ही बचाव हेतु कोई हेलीकाप्टर ईरान को समझदारी से काम लेना चाहिए अपने नहीं लोगों के हित में क्योंकि जब से उसका सबसे बड़ा पुल अमेरिका ने तोड़ दिया इससे आम नागरिकों को ही परेशानी होगी जिसे बनने में 10 साल से ज्यादा लगे होंगे, आज टेक्नोलॉजी का युग है और जो देश टेक्नोलॉजी में आगे होगा बेशक नुकसान होगा लेकिन अन्त में विजय वही होगा जहाँ आसमान में 100-150 विमान ईरान में बम गिरा रहें हैं वहाँ 2 -4 विमान तो नष्ट हो गया तो उससे उसे क्या फर्क पड़ेगा इजराइल एक छोटा सा देश होकर कई फ्रंट पर युद्ध लड़ रहा है तो नुकसान होगा ही युद्ध विनाशकारी होता है और अमेरिका कभी आधा नहीं छोड़ेगा और उसे भी नुकसान काफी हुआ है लेकिन जहाँ तक आतंकवादी के सपोर्ट करने का सवाल है वहाँ ईरान से ज्यादा तो पाकिस्तान है उसे अमेरिका को ठोकना चाहिए सारा युद्ध अरब में खलीफा बनने की होड़ और निर्दोष नागरिक की मौत का तांडव नृत्य से मानवता शर्मसार हो रही है ईरान और अमेरिका -इजराइल युद्ध से भारत का क्या लेना देना, ऐ उनका युद्ध है वो समझें 1984 में मैं जब टीवी जो ब्लैक एंड वाइट था वहाँ सलमा आगा टीवी पर इराक - ईरान युद्ध के बारे में अन्त में समाचार में सुनता था जो 10 साल तक चली युद्ध में किसी भी देश को कमजोर नहीं समझना चाहिए और शान्ति से ही समाधान निकालना चाहिए बड़बोलापन युद्ध में आग में घी डालने का काम करता है इससे बचना चाहिए विश्व शांति का मूल उपाय युद्ध और हथियार में नहीं समझदारी और इंसानियत में ही निहित है।विज्ञान की प्रगति के साथ विश्वभर में चारों ओर विकास ने नई करवट ली है। विकास के नित नये आयामों से सभी देश अपनी समृद्धि को तीव्र वेग से आगे बढ़ाने में जुट गये हैं। जिसके कई सुखद परिणाम भी सामने आये हैं। विज्ञान ने चिकित्सा स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग, यातायात, दूरसंचार, युद्ध उपकरणों इत्यादि सभी क्षेत्रों में आशातीत प्रगति की है और इस ओर अभी भी वैज्ञानिकों का प्रयास जारी है। इस कारण आधुनिक भौतिक साधनों ने इन्सानों का जीवन ही बदल दिया है। सभी देश विज्ञान के आधार पर अपने देश को प्रगतिशील,समृद्धशाली, शक्तिशाली बनाने की होड़ में लगे हुए हैं। इस होड़ अर्थात प्रतिस्पर्धा को लेकर सभी देश अपनी सुरक्षा के लिए अस्त्रा-शस्त्रों का उत्पादन करने में जुट गये हैं।इस युद्ध में निर्दोष नागरिकों की बहुत अधिक संख्या में जान जा रही है जो आप नहीं देख पा रहें हैं इसमें कई भारतीय भी हैं इससे युद्ध में झोंके गए लोगों का जीवन अस्त व्यस्थ हो गया है इस जंग में अमेरिका के सैनिकों की भी मौत हो रही है एक देश दुसरे देश के शक्ति प्रदर्शन के चक्कर में अपने देश का ही नहीं बल्कि पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था तबाह हो रही है व विश्व शांति पर खतरा मंडराने लगा है 1महीने से ऊपर चल रहे इस युद्ध में केवल तबाही मची है व बेगुनाह लोगों की मौत हो रही है अब ऐसा लग रहा है कि यह युद्ध में कहीं परमाणु अस्त्रों का इस्तेमाल न हो जाए लेकिन ऐसा किस उद्देश्य के लिए हो रहा होगा उधर चीन और ताईवान में भी युद्ध के बादल मंडरा रहें हैं जैसा चीन और अमेरिका के इस पर चिंतन करने की आवश्यकता है आज सारे देश में हथियार खरीदने की होड़ लगी है इसे रोकना चाहिए,इस कारण नित्य नये-नये घातक अस्त्रा-शस्त्रों का निर्माण हो रहा है जो कभी भी विनाश के कारण बन सकते हैं। अस्त्रा-शस्त्रों की बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण सम्पूर्ण विश्व चिंतन के सागर में डूबा हुआ है। इससे बचने के लिये सभी देश, जो स्वयं अपनी सुरक्षा के लिये चिंतित होने पर भी अस्त्रा-शस्त्रा के भंडारण में जुटे हुए होने के बाद भी विश्व शान्ति के लिये युद्ध नहीं मानवता को समझना चाहिए, विध्वंशकारी अस्त्र-शस्त्रों से विनाश की स्थिति को जानते हुए भी कई देशों ने एक-दूसरे देश पर आक्रमण कर विनाश लीला का खुला तांडव खेला है। जिसके दुष्परिणामों ने असंख्य इन्सानों की जान ली है। वहाँ अनगिनत देश की समृद्धि की झलक दिखाने वाले निर्माण कार्यों को विध्वंश कर दिया है। चारों ओर तबाही मचाने में किसी प्रकार की कमी नहीं रखी है। विकास को विनाश में बदल दिया है। इस आक्रमणकारी नीति से बचने के लिये सभी अपने देश में शान्ति, खुशहाली, समृद्धि के पक्ष में निःशस्त्रीकरण की फिराक में रहते हैं और इसके लिए सभी देशों का जन समर्थन जुटाने में कटिबद्ध हैं। क्योंकि सभी को विनाश का खतरा सामने दिखाई देता है। आज दुनिया परमाणु युद्ध की तरफ बढ़ रहा है इसके परिणाम हम सभी जानते हैं 76 साल पहले 6 अगस्त 1945 को अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा शहर पर दुनिया का पहला परमाणु बम हमला किया था। इसके तीन दिन बाद जापान के ही नागासाकी शहर पर दूसरा परमाणु बम गिराया गया। दोनों शहर लगभग पूरी तरह तबाह हो गए। डेढ लाख से अधिक लोगों की पल भर में जान चली गई और जो बच गए वो अपंग हो गए और आज भी जो बच्चे जन्म लेते हैं वे अपंगता के शिकार होते हैं क्योंकि रेडिएशन का खतरा 100वर्षों ?। इससे भी अधिक रहता है व जिसकी मार मासूम लोगों को भुगतना पड़ता है इसके लिये सभी देशों को निर्दोष इन्सानों की रक्षा हेतु शांति का संकल्प लेने पर जोर दिया जाना चाहिए ताकि कभी भी किसी देश पर आक्रमण करने की स्थिति ही नहीं बने व लाखों निर्दोष नागरिकों की मौत ना हो व मानवता जिन्दा रहे । विश्व में अस्त्र-शस्त्रों की होड़ ही आक्रमणकारी बनाने का माध्यम बनती है। वहाँ इन्सान भी आवेश, आक्रोश,गुस्से, बदले की भावना, किसी को प्रताड़ित करने के उद्देश्य से, किसी का तिरस्कार करने, किसी को दंडित करने के लिये आक्रामक रुख अपनाते हुए आक्रमणकारी होता है तो उसके सामने, सामने वाले के विनाश के अलावा कुछ दिखाई नहीं देता है। आक्रमणकारी की चाह रहती है कि वह जो आक्रमण कर रहा है वह विफल न हो जावे व परमाणु बम के हमला की आशंका बढ़ जाती है । इस कारण इन्सान-इन्सान में घृणा, द्वेषभाव, ईर्ष्या, दुश्मनी आदि उत्पन्न होती है जो इन्सानों की सुख-शांति, अमनचैन छीनती है। ऐसी आक्रमणकारी नीति से बचने के लिये और विश्व में शान्ति स्थापित करने हेतु परमाणु निःशस्त्रीकरण पर अधिक बल देना चाहिए। इसी सुख-शान्ति अमन-चैन के साथ एक-दूसरे के प्रति भाईचारे के भाव बनाने के लिए इन्सान को अन्य किसी इन्सान पर आक्रमणकारी नहीं बल्कि सहयोगी बन कर रहने में ही भलाई है। इससे आक्रमणकारी को भी शांति और संतोष मिलता है। बुरे विचार इसके दिल और दिमाग से हट जाते हैं। ऐसी मानसिक शांति पाने के लिये आक्रमणकारी नहीं बनने की सीख आचार्य तुलसी ने देश की आजादी के बाद मानवता आंदोलन चलाकर विश्व को एक नई दिशा दी। मानवता के आधार पर इन्सान यह सोचे कि मैं आक्रमणकारी नहीं बनूं और न ही सहयोग दूंगा। इस दृढ़ संकल्प द्वारा वह शांति का शंखनाद करने में कदापि पीछे नहीं रहेगा। वर्तमान में इसकी महत्ती आवश्यकता है। इसी प्रकार एक-दूसरे देश पर आक्रमण करता है तब अन्य देश आपस में लड़ने वाले किसी एक देश की आक्रामक नीति में भागीदार बनता है, उसे ममदद देता है, सहयोगी के रूप से दुश्मन समझने वाले देश से युद्ध करता है तब वहाँ सर्वत्रा विनाश ही विनाश होने की संभावना बढ़ती है। ऐसी विषम स्थिति में विश्व शांति को कभी भी खतरा उत्पन्न हो सकता है। विनाश की इस स्थिति से अपने को दूर रखने के लिए आक्रामक देश को समर्थन सहयोग नहीं देने का संकल्प अणुव्रतों को आधार मानकर किया जाय तो विश्व शांति की स्थिति बन सकती है और इन्सानों को अकाल मृत्यु, बेमौत मरने से बचाया जा सकता है।

भाजपा के 47 साल: शिखर पर जीत, सिद्धांतों पर सवाल

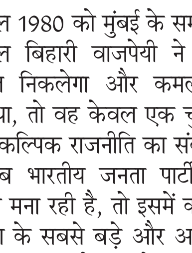

दिलीप कुमार पाठक

6 अप्रैल 1980 को मुंबई के समंदर किनारे जब अटल बिहारी वाजपेयी ने अंधेरा छंटेगा, सूरज निकलेगा और कमल खिलेगा का उद्घोष किया था, तो वह केवल एक चुनावी नारा नहीं बल्कि एक वैकल्पिक राजनीति का संकल्प था। आज 2026 में जब भारतीय जनता पार्टी अपना 47वां स्थापना दिवस मना रही है, तो इसमें कोई दो राय नहीं कि वह दुनिया के सबसे बड़े और अजेय नजर आने वाले राजनीतिक संगठन के रूप में स्थापित हो चुकी है। लेकिन इस अभूतपूर्व सफलता के ऊंचे बुर्ज पर बैठकर जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं, तो कुछ बुनियादी सवाल आज भी पार्टी की उस अलग तरह के दल वाली छवि का पीछा कर रहे हैं। क्या सत्ता के इस विशाल साम्राज्य को खड़ा करने की प्रक्रिया में वे आदर्श कहीं पीछे छूट गए हैं, जो इस दल की नींव में रखे गए थे? भारतीय राजनीति के इस लंबे सफर में भाजपा ने शून्य से शिखर तक की जो यात्रा तय की है, वह संगठनात्मक कौशल का अद्भुत उदाहरण तो है, पर क्या यह सफर अपनी मूल शुचिता को भी साथ लेकर चल पाया है?

भाजपा की वैचारिक यात्रा का मूल आधार अंत्योदय और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के दो मजबूत स्तंभ थे। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का सपना था कि विकास की कतार में खड़े अंतिम व्यक्ति का उदय हो। हालांकि, उज्ज्वला से लेकर मुफ्त राशन और सीधे बैंक खातों में मदद जैसी बड़ी योजनाओं ने एक बड़ा लाभार्थी वर्ग तैयार किया है, जिसे पार्टी अपनी सबसे बड़ी उपलब्धि मानती है। लेकिन क्या कल्याणकारी योजनाओं का यह दाता और याचक वाला मॉडल असल सशक्तिकरण है? आज की राजनीति सेवा से ज्यादा आयोजन प्रबंधन और डिजिटल प्रचार पर टिकी नजर आती है। जिस नैतिक बल और सादगी की मिसाल पुराने दौर के नेता देते थे, उसकी जगह अब चकाचौंध और भारी-भरकम चुनावी मशीनरी ने ले ली है। विकास के दावों के बीच यह सवाल अक्सर दबी जुबान में पूछा जाता है कि क्या हम बुनियादी मुद्दों के बजाय केवल भावनात्मक और सांकेतिक राजनीति के जाल में तो नहीं उलझ गए हैं? एक जीवंत लोकतंत्र के लिए मजबूत विपक्ष का होना उतना ही जरूरी है जितना कि एक स्पष्ट बहुमत वाली सरकार का होना। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में विपक्ष मुक्त भारत की जिस अवधारणा को हवा दी गई, उसने लोकतांत्रिक संतुलन को बुरी तरह असहज किया है। जांच एजेंसियों के बढ़ते प्रभाव और विपक्षी नेताओं का बड़ी संख्या में भाजपा में शामिल होकर रातों-रात पवित्र हो जाना, पार्टी की उस शुचिता पर गहरा सवालिया निशान लगाता है जिसका दावा वह दशकों से करती आई है। क्या सत्ता पाने की व्याकुलता में किसी भी दल के दागी चेहरों को अपना लेना उस कार्यकर्ता आधारित संगठन के लिए सही है, जो कभी अपने सिद्धांतों पर गर्व करता था? आज पार्टी का ढांचा भी पहले की तुलना में अधिक व्यक्ति-केंद्रित हो गया है। सामूहिक नेतृत्व और आंतरिक विमर्श की जगह अब केवल ऊपर से आने वाले आदेशों और हां में हां मिलाने वाली संस्कृति ने ले ली है।

राम मंदिर का निर्माण, अनुच्छेद 370 का खात्मा और नागरिकता कानूनों जैसे मुद्दों पर उसे व्यापक जनसमर्थन मिला है, लेकिन क्या राष्ट्रवाद की इस प्रबल लहर ने देश की बुनियादी आर्थिक चुनौतियों को कालीन के नीचे धकेल दिया है? बढ़ती बेरोजगारी, मध्यम वर्ग पर महंगाई का लगातार बढ़ता बोझ और अमीर-गरीब के बीच बढ़ती गहरी खाई ऐसे कड़वे सच हैं, जिन्हें केवल भव्य आयोजनों और नारों से नहीं बदला जा सकता। आत्मनिर्भर भारत का संकल्प तब तक अधूरा है जब तक देश का शिक्षित युवा रोजगार के लिए दर-दर भटक रहा है। बड़े व्यापारिक घरानों के साथ बढ़ती नजदीकियों ने भी यह धारणा पुख्ता की है कि पार्टी का झुकाव अब आम आदमी से हटकर खास प्रबंधकों की ओर हो गया है।

स्थापना दिवस के इस महत्वपूर्ण अवसर पर भाजपा को गहराई से आत्ममंथन करने की जरूरत है। क्या वह केवल चुनाव जीतने वाली एक पेशेवर मशीन बनकर

रहना चाहती है या वापस उस नैतिक राजनीति की ओर लौटेगी, जिसका वादा 1980 के मुंबई अधिवेशन में किया गया था? लोकतंत्र केवल बहुमत का नाम नहीं है, यह अल्पमत के सम्मान, आलोचना को पचाने की शक्ति और संस्थाओं की स्वायत्तता का नाम भी है। यदि भाजपा को आने वाले दशकों में अपनी साख और गौरवशाली इतिहास को बचाए रखना है, तो उसे अपनी जीत के अहंकार से ऊपर उठकर उन लोकतांत्रिक मूल्यों को फिर से गले लगाना होगा, जो उसकी स्थापना की मूल भावना थे। सत्ता तो आती-जाती रहती है, लेकिन जो विचार अपनी नैतिकता और लोक-लाज की परवाह करना छोड़ देता है, वह इतिहास की नजरों में अपनी चमक धीरे-धीरे खोने लगता है। आने वाला समय बताएगा कि कमल की यह पंखुड़ियाँ सिद्धांतों की महक फैलाती हैं या केवल सत्ता की धूप में मुरझा कर रह जाती हैं।

निर्णायक सप्ताह आरबीआई नीति और वैश्विक तनाव तय करेंगे बाजार की दिशा

– तेल की कीमत, रुपये की स्थिति और विदेशी निवेशकों की गतिविधियों पर भी रहेगी निवेशकों की नजर

मुंबई ।

पिछले सप्ताह भारतीय शेयर बाजार में लगातार गिरावट का दौर रहा, जिससे निवेशकों की चिंता बढ़ गई है।

नए वित्त वर्ष की शुरुआत में यह सप्ताह बाजार की दिशा तय करने वाला माना जा रहा है। घरेलू आर्थिक संकेतों के साथ-साथ वैश्विक अनिश्चितताओं ने निवेशकों की सोच में असमंजस पैदा कर दिया है। इस हफ्ते कई ऐसे प्रमुख कारक हैं, जो बाजार की चाल पर निर्णायक असर डाल सकते हैं। भारतीय रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति समिति की बैठक 6 से 8 अप्रैल तक होगी। इस बैठक में ब्याज दर, महंगाई और लिक्विडिटी जैसे अहम मुद्दों पर फैसला लिया जाएगा। निवेशकों की निगाह इस पर है कि आरबीआई महंगाई और कच्चे तेल की कीमतों में उछाल के बीच किस तरह की नीति अपनाता है। यदि ब्याज दर बढ़ाई जाती है, तो बैंकिंग और रियल एस्टेट सेक्टर पर दबाव बढ़ सकता है। वहीं, उदार नीति से उपभोक्ता खर्च और कॉर्पोरेट निवेश को बढ़ावा मिल सकता है। पश्चिम एशिया में अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ता तनाव अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अनिश्चितता बढ़ा रहा है। इसी बीच कच्चे तेल की कीमतों में तेजी ने भारत जैसे आयातक देश के लिए दबाव बढ़ा दिया है। महंगे तेल का असर चालू खाता घाटे और महंगाई पर पड़ सकता है। इसके अलावा, कंपनियों की लागत बढ़ने और उपभोक्ताओं की जेब पर असर डालने से बाजार की नकारात्मक भावना को बढ़ावा मिल सकता है। पिछले सप्ताह रुपये का डॉलर के मुकाबले रिकॉर्ड निचले स्तर पर गिरना निवेशकों की चिंता का मुख्य कारण बना। आरबीआई के हस्तक्षेप से थोड़ी स्थिरता आई, लेकिन मुद्रा की अस्थिरता विदेशी निवेश और आयात लागत को प्रभावित कर सकती है। विदेशी संस्थागत निवेशकों द्वारा भारी बिकवाली भी बाजार पर दबाव बनाए रख रही है। यदि यह रुझान जारी रहा, तो तेजी की उम्मीदें कमजोर पड़ सकती हैं। इस सप्ताह भारतीय शेयर बाजार की दिशा आरबीआई

की नीति, तेल की कीमत, रुपये की स्थिति और विदेशी निवेशकों की गतिविधियों पर निर्भर करेगी। निवेशकों को सतर्क रहना और इन संकेतकों पर नजर रखना जरूरी है, क्योंकि किसी भी बदलाव से बाजार में तेजी या गिरावट दोनों तेज़ी से देखने को मिल सकती है।

एफपीआई ने बाजारों से अप्रैल में की पहले दो सत्रों में 19,837 करोड़ की बिकवाली

- पश्चिम एशिया संघर्ष, बढ़ते तेल दाम और रुपये में कमजोरी ने विदेशी निवेशकों को बेचने पर मजबूर किया

नई दिल्ली ।

विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) की भारतीय शेयर बाजार से निकासी का सिलसिला अप्रैल 2026 में भी जारी है। केवल अप्रैल के पहले दो कारोबारी सत्रों में ही एफपीआई ने 19,837 करोड़ रुपये (लगभग 2.1 अरब डॉलर) के शेयर बेचे। यह मार्च में हुई रिकॉर्ड निकासी के बाद बाजार पर दबाव बनाए रखने वाला नया संकेत है। मार्च 2026 में एफपीआई ने भारतीय शेयर बाजार से लगभग 1.17 लाख करोड़ रुपये (लगभग 12.7 अरब डॉलर) निकाले थे, जो किसी भी महीने की अब तक की सबसे बड़ी निकासी थी। वहीं फरवरी में निवेशकों ने शेयर बाजार में 22,615 करोड़ रुपये डाले थे, जो पिछले 17 महीनों का सबसे ऊँचा निवेश था। एनएसडीएल के आंकड़ों के अनुसार, 2026 में अब तक एफपीआई ने कुल 1.5 लाख करोड़ रुपये की बिकवाली की है। बाजार के जानकारों के अनुसार, पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष, कच्चे तेल के दाम के 100 डॉलर प्रति बैरल के पार जाने, रुपये में लगातार कमजोरी और डॉलर की मजबूती ने बिकवाली को बढ़ावा दिया है। उन्होंने कहा कि युद्ध के बाद रुपये में लगभग चार प्रतिशत की गिरावट आई है, और आगे भी कमजोरी की आशंका बिकवाली को और बढ़ा रही है।

अमेरिका में बॉन्ड पर प्रतिफल बढ़ने से निश्चित आय वाली परिसंपत्तियों का आकर्षण बढ़ा है। ऐसे में निवेशक अपने निवेश को शेयरों से अन्य संपत्तियों की ओर संतुलित कर रहे हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि वैश्विक अनिश्चितताओं और घरेलू मुद्रा कमजोरी के बीच, एफपीआई की बिकवाली का दबाव बाजार पर और कुछ समय तक बना रह सकता है।

सोने के दामों में 18.5 फीसदी गिरावट

– गिरवी सोने को नीलामी से बचाने सावधान रहें, 50–60त्न से ज्यादा लोन लेने से बचें

मुंबई ।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में उतार-चढ़ाव के बीच सोने के दामों में करीब 18.5 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई है। कीमतों में इस कमी का असर गोल्ड लोन लेने वाले ग्राहकों पर भी पड़ रहा है। जिन लोगों ने ऊंचे भाव पर सोना गिरवी रखकर अधिक राशि का कर्ज लिया था, उनके सामने अब 'मार्जिन कॉल' का खतरा बढ़ गया है।विशेषज्ञों के अनुसार, जब सोने की कीमत घटती है तो गिरवी रखे आभूषणों की वैल्यू कम हो जाती है और लोन-टू-वैल्यू (एलटीवी) अनुपात बढ़ जाता है। ऐसी स्थिति में बैंक या वित्तीय संस्थान अतिरिक्त रकम जमा कराने या आंशिक लोन चुकाने का नोटिस दे सकते हैं।

तय समय में भुगतान नहीं करने पर गिरवी सोने की नीलामी की प्रक्रिया भी शुरू हो सकती है।वित्तीय सलाहकारों का कहना है कि मौजूदा अस्थिर बाजार में सोने के वर्तमान मूल्य का 50 से 60

फीसदी तक ही लोन लेना सुरक्षित माना जाता है। इससे कीमतों में गिरावट आने पर भी उधारकर्ता के पास सुरक्षा का पर्याप्त मार्जिन रहता है और नीलामी की नौबत नहीं आती। ग्राहकों को समय-समय पर बाजार भाव पर नजर रखने और जरूरत पड़ने पर लोन आंशिक रूप से चुकाने की सलाह दी गई है।

एफएमसीजी कंपनियों की जनवरी-मार्च तिमाही में स्थिर मांग के बीच वृद्धि मजबूत रही

नई दिल्ली ।

रोजमर्रा के उपभोग के सामान बनाने वाली एफएमसीजी कंपनियों की वित्त वर्ष 2025-26 की जनवरी-मार्च तिमाही में स्थिर मांग के बीच वृद्धि मजबूत रही। हालांकि, पश्चिम एशिया के बाजारों में जारी भू-राजनीतिक तनाव चिंता का विषय बना हुआ है। मैरिको, डाबर और एडब्ल्यूएल एग्री बिजनेस (पूर्व में अदाणी विल्मर) जैसी कंपनियों ने मात्रा और मूल्य दोनों में वृद्धि दर्ज की है। यह बढ़ोतरी मूल्य निर्धारण में बदलाव, विभिन्न उत्पाद श्रेणियों में गति, मजबूत घरेलू खपत और संघर्ष प्रभावित क्षेत्रों को छोड़कर अंतरराष्ट्रीय बाजारों में वृद्धि के कारण संभव हुई है। कंपनियों को उम्मीद है कि महंगाई में कमी आने से मार्जिन में सुधार होगा। हालांकि वे आने वाली तिमाहियों को लेकर सतर्कता के साथ आशावादी बनी हुई हैं। उनका मानना है कि स्थिर आर्थिक परिस्थितियों और बेहतर खपत रुझानों के कारण घरेलू मांग में सुधार जारी रहेगा। घरेलू कंपनी मैरिको ने अपनी की तिमाही की जानकारी में बताया कि इस अवधि में उसकी एकीकृत आय में सालाना आधार पर करीब 20

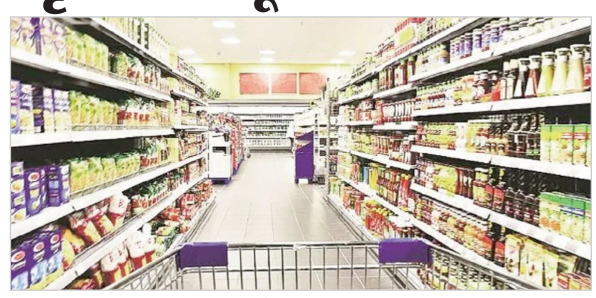

प्रतिशत के आसपास वृद्धि हुई है। यह वृद्धि मूल्य निर्धारण उपायों, केश तेल श्रेणी में मजबूत प्रदर्शन और अंतरराष्ट्रीय कारोबार में बेहतर मांग से संभव हुई। डाबर ने भी अपेक्षाकृत संतुलित प्रदर्शन दर्ज करते हुए मार्च तिमाही में मध्यम एकल अंक की आय वृद्धि का अनुमान जताया है। कंपनी ने कहा कि घरेलू मांग में क्रमिक सुधार देखा गया और भारत में उसका त्वरित उपभोग वस्तु कारोबार उच्च एकल अंक की वृद्धि दर्ज कर सकता है।

मिडिल ईस्ट युद्ध से राजस्थान के बीकानेरी स्नैक्स निर्यात पर भारी असर

– माल ढुलाई की लागत में तेज़ी से वृद्धि हुई है और व्यापार पर दबाव बढ़ा

नई दिल्ली ।

अमेरिका-ईरान संघर्ष और होर्मुज स्ट्रेट की बंदिशों ने राजस्थान के बीकानेर के स्नैक्स उद्योग को भी झकझोर दिया है। भुजिया, पापड़ और मसालों का निर्यात अब महंगा और लंबा हो गया है, जिससे व्यापारियों की चिंता बढ़ गई है।

निर्यातक बताते हैं कि पहले 30 दिनों में पहुंचने वाले कंटेनर अब लंबे और सुरक्षित मार्ग अपनाने के कारण 60 दिन तक ले जा रहे हैं। इससे माल ढुलाई की लागत में तेज़ी से वृद्धि हुई है और व्यापार पर दबाव बढ़ा है। बीकानेरी स्नैक्स खाड़ी देशों और यूरोप में बड़े पैमाने पर निर्यात होते हैं।

यूएस-ईरान युद्ध के कारण माल ढुलाई शुल्क बढ़ा, कंटेनरों की कमी हुई और सप्लाई चेन प्रभावित हुई। अरब देशों में मांग मजबूत है, लेकिन डिलीवरी में देरी के कारण नुकसान हो रहा है। खाद्य तेल की कीमत में पिछले एक महीने में लगभग 20 फीसदी की वृद्धि हुई, जबकि पैकेजिंग लागत में 30-40 फीसदी का इजाफा हुआ। ताड़ के तेल और सोयाबीन जैसे कच्चे माल के आयात में भी बाधा आई है। इन कारणों से उद्योग पर वित्तीय दबाव और बढ़ गया है।

बीकानेर से हर महीने 15-20 कंटेनर भुजिया और पापड़ तथा लगभग 60 कंटेनर अन्य स्नैक्स और मसाले निर्यात किए जाते हैं। मुख्य बाजार ईरान, इराक, ओमान, यूएई, कतर, बहरीन और यूरोप के ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, इटली व स्पेन हैं। युद्ध और वैश्विक टेंशन के कारण करोड़ों रुपये का माल बंदरगाहों पर या रास्ते में फंसा हुआ है।

सेंसेक्स की शीर्ष छह कंप नियों का का बाजार पूंजीकरण 64,734 करोड़ घटा

– शीर्ष 10 कंपनियों में रिलायंस इंडस्ट्रीज पहले स्थान पर बरकरार रही

नई दिल्ली ।

बीते सप्ताह कम कारोबारी सत्रों वाले में सेंसेक्स की शीर्ष 10 सबसे मूल्यवान कंपनियों में से छह के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) में सामूहिक रूप से 64,734.46 करोड़ रुपये की गिरावट आई। सबसे ज्यादा नुकसान में भारती एयरटेल रही। समीक्षाधीन सप्ताह में भारती एयरटेल का बाजार पूंजीकरण 29,993.07 रुपये करोड़ घटकर 10,20,420.26 करोड़ रुपये पर आ गया।

आईसीआईसीआई बैंक की बाजार हैसियत 12,845.81 करोड़ रुपये घटकर 8,70,705.49 करोड़ रुपये रह गई।बजाज फाइनेंस का मूल्यांकन 11,169.36 करोड़ रुपये कम होकर 5,14,226.12 करोड़ रुपये रह गया। एचडीएफसी बैंक का बाजार पूंजीकरण 7,822.79 करोड़ रुपये घटकर 11,56,195.90 करोड़ रुपये और हिंदुस्तान यूनिलीवर का मूल्यांकन 2,349.59 करोड़ रुपये घटकर 4,85,190.60 करोड़ रुपये रहा। भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) की बाजार हैसियत 553.84 करोड़ रुपये घटकर 9,41,015.31 करोड़ रुपये रह गई। इस रुख के उलट टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) का बाजार मूल्यांकन 22,359.78 करोड़ रुपये बढ़कर 8,87,028.43 करोड़ रुपये हो गया।इंफोसिस का पूंजीकरण 12,374.76 करोड़ रुपये बढ़कर

5,27,409.43 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। लार्सन एंड टुब्रो का मूल्यांकन 6,575.43 करोड़ रुपये बढ़कर 4,97,111.62 करोड़ रुपये हो गया। रिलायंस इंडस्ट्रीज की बाजार हैसियत 3,518.45 करोड़ रुपये बढ़कर 18,28,034.07 करोड़ रुपये हो गई। शीर्ष 10 कंपनियों में रिलायंस इंडस्ट्रीज पहले स्थान पर कायम रही। उसके बाद क्रमशः एचडीएफसी बैंक, भारती एयरटेल, एसबीआई, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज, आईसीआईसीआई बैंक, इन्फोसिस, बजाज फाइनेंस, लार्सन एंड टुब्रो और हिंदुस्तान यूनिलीवर का स्थान रहा।

रिजर्व बैंक की ऐप से बिना बैंक जाए मिलेगा लोन

- किसानों, डेयरी संचालकों और पर्सनल लोन लेने वालों के लिए प्रक्रिया होगी आसान

नई दिल्ली ।

अब लोन लेने के लिए बैंकों के चक्कर लगाने और लंबी कागजी प्रक्रिया से गुजरने की जरूरत नहीं पड़ेगी। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) जल्द ही एक नई डिजिटल व्यवस्था शुरू करने जा रहा है, जिसके तहत मोबाइल ऐप के माध्यम से मिनटों में लोन स्वीकृत किया जा सकेगा। इस पहल का उद्देश्य छोटे कर्जदारों, किसानों, डेयरी संचालकों और पर्सनल लोन लेने वाले ग्राहकों को त्वरित और पारदर्शी सुविधा उपलब्ध कराना है।नई प्रणाली के तहत जमीन के रिकॉर्ड, क्रेडिट स्कोर और आय संबंधी जानकारी एक ही प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध होगी। इससे बैंक और वित्तीय संस्थानों को आवेदक की पात्रता जांचने में आसानी होगी और लोन प्रक्रिया तेज होगी। शुरुआत में छोटे कर्ज और कृषि से जुड़े ऋण दिए जाएंगे, जिससे ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों के लोगों को सीधा लाभ मिलेगा।बताया जा रहा है कि इस डिजिटल प्लेटफॉर्म से कई बैंक और डेटा सेवा प्रदाता जुड़ेंगे, जिससे सूचनाओं का आदान-प्रदान सुरक्षित और त्वरित होगा। इससे बैंकों की परिचालन लागत भी कम होगी और ग्राहकों को कम समय में ऋण मिल सकेगा। विशेषज्ञों का मानना है कि यह कदम देश में डिजिटल बैंकिंग को नई दिशा देगा और वित्तीय समावेशन को मजबूती प्रदान करेगा।

ईरान युद्ध की वजह से अमेरिका में भी बढ़ने लगी है महंगाई

वाशिंगटन ।

ईरान के खिलाफ संभावित युद्ध ने अमेरिका में आर्थिक दबाव बढ़ा दिया है। पेट्रोल और डीजल की कीमतों में तेज बढ़ोतरी और डिलीवरी कंपनियों द्वारा अधिभार लगाने से आम उपभोक्ताओं की जेब पर असर दिखने लगा है। अमेरिका में पेट्रोल की औसत कीमत शुक्रवार को 4.09 डॉलर प्रति गैलन पहुंच गई, जो अगस्त 2022 के बाद का उच्चतम स्तर है। डीजल की कीमत 3.64 डॉलर से बढ़कर 5.53 डॉलर प्रति गैलन हो गई है। डीजल का व्यापक उपयोग कृषि, निर्माण और परिवहन उद्योगों में होता है। ई-कॉमर्स दिग्गज अमेजन ने 17 अप्रैल से तीसरे पक्ष विक्रेताओं पर 3.5 फीसदी ईंधन अधिभार लगाने की घोषणा की। अमेरिकी डाक सेवा (यूएसपीएस) भी अस्थायी रूप से 8 फीसदी ईंधन अधिभार लागू करने की योजना बना रही है। विशेषज्ञों का कहना है कि अगर युद्ध लंबा खिंचता है, तो अमेरिका की आपूर्ति श्रृंखला प्रभावित होगी। शिकागो फेडरल रिजर्व के अध्यक्ष ऑस्टन गूल्सबी ने चेताया कि बढ़ी हुई परिवहन लागत अन्य वस्तुओं की कीमतों पर भी असर डालेगी, जिससे जीवनयापन महंगा होगा।

मूडीज ने भारत की जीडीपी वृद्धि दर घटाकर 6 फीसदी की, महंगाई बढ़ने का खतरा

- निजी उपभोग में कमी, औद्योगिकी गतिविधियों में सुस्ती और निवेश में गिरावट मुख्य कारण

नई दिल्ली ।

मूडीज रेटिंग्स ने चालू वित्त वर्ष 2026-27 के लिए भारत की आर्थिक वृद्धि दर का अनुमान घटाकर 6 प्रतिशत कर दिया है। रेटिंग एजेंसी ने कहा कि पश्चिम एशिया में चल रहे संघर्ष के कारण ईंधन और खाद्य कीमतों में वृद्धि होगी, जिससे महंगाई पर दबाव बढ़ेगा और घरेलू उपभोग प्रभावित होगा। मूडीज की रिपोर्ट के अनुसार, भारत की वृद्धि दर पहले अनुमानित 6.8 फीसदी से घटकर 6 फीसदी रहने की संभावना है। निजी उपभोग में कमी, औद्योगिकी गतिविधियों में सुस्ती और निवेश में गिरावट इसका मुख्य कारण हैं। ईंधन और रसोई गैस (एलपीजी) की कीमतों में बढ़ोतरी के साथ-साथ उर्वरक आयात पर निर्भरता से खाद्य मुद्रास्फीति में भी बढ़ोतरी हो सकती है। मूडीज ने चेताया है कि भूराजनीतिक तनाव महंगाई के जोखिम को ऊपर की ओर ले जा सकता है। एजेंसी ने 2026-27 में औसत मुद्रास्फीति 4.8 फीसदी रहने का अनुमान जताया है, जो 2025-26 की 2.4 फीसदी से अधिक है। इस पर नीतिगत प्रतिक्रिया के रूप में रेपो दर या तो स्थिर रखी जाएगी या धीरे-धीरे बढ़ाई जाएगी। पश्चिम एशिया से भारत का कच्चा तेल आयात लगभग 55 फीसदी और एलपीजी का 90 फीसदी आता है। इसी कारण ईंधन और परिवहन लागत बढ़ सकती है। इसके अलावा खाड़ी देशों से भेजे जाने वाले रेमिटेंस पर भी असर पड़ेगा, क्योंकि इसके 40 फीसदी हिस्से की आपूर्ति वहीं से होती है। दूसरी एजेंसियों का भी अनुमान है। ओईसीडी ने भारत की जीडीपी वृद्धि दर 6.1 फीसदी, जबकि आईसीआरए ने 6.5 फीसदी बताई है। आईसीआरएने कहा कि निर्यात स्थिर रहेगा, लेकिन आयात बढ़ने से चालू खाता घाटा बढ़ सकता है।

सुजुकी मोटरसाइकिल का लक्ष्य वैश्विक बिक्री में 50 फीसदी योगदान

- खरखौदा नया संयंत्र घरेलू और निर्यात बिक्री बढ़ाएगा

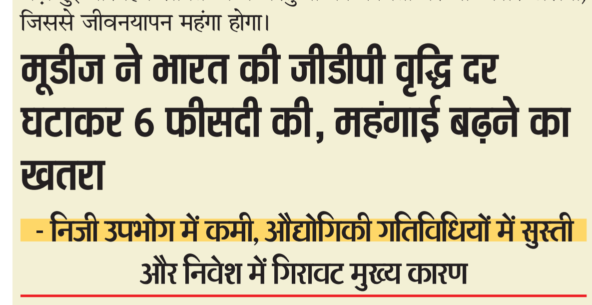

नई दिल्ली ।

सुजुकी मोटरसाइकिल इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (एसएमआईपीएल) ने अपनी वैश्विक बिक्री में योगदान बढ़ाने के लिए महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है। कंपनी का उद्देश्य सुजुकी मोटर कॉरपोरेशन (एसएमएसी) की दुनिया भर में मोटरसाइकिल बिक्री में 50 प्रतिशत से अधिक हिस्सा देना है। वित्त वर्ष 2025-26 में एसएमआईपीएल ने 14,39,415 इकाइयों की अब तक की सबसे ऊंची बिक्री दर्ज की, जो पिछले वर्ष की 12,56,155 इकाइयों से 15 फीसदी अधिक है। घरेलू बिक्री 11,74,874 इकाई रही और निर्यात 26 फीसदी बढ़कर 2,64,541 इकाई हुआ। कंपनी हरियाणा के खरखौदा में नया संयंत्र बना रही है, जिसमें लगभग 1,174 करोड़ रुपये का निवेश होगा और इसकी सालाना उत्पादन क्षमता 7.5 लाख इकाई की होगी। वर्तमान खेरकी दौला संयंत्र 14 लाख इकाई का उत्पादन करता है।

सरसों की गिरावट के बीच सोयाबीन, पामतेल और बिनौला तेल में मजबूती

- शादी-विवाह के मौसम की मांग और विदेशी बाजार में गतिविधियों के कारण तेलों की कीमतें बढ़ीं

नई दिल्ली ।

बीते सप्ताह देश के तेल-तिलहन बाजार में सरसों के दाम घटे, जबकि सोयाबीन, मूंगफली, पामतेल और बिनौला तेल की कीमतें मजबूती दिखाईं। शादी-विवाह के मौसम की मांग और विदेशी बाजार में गतिविधियों के कारण अन्य तेलों की कीमतें बढ़ीं। बड़ी तेल मिलों ने सस्ते दाम पर सरसों खरीदने के लिए उत्पादन अनुमान बढ़ाया और आयात शुल्क को लेकर अफवाहें फैलाईं। किसानों ने अपनी फसल रोक-रोक कर बाजार में उतारी, जिससे सरसों तेल-तिलहन के दाम गिरावट के साथ बंद हुए। सोयाबीन तेल की कीमत 1,390-95 डॉलर प्रति टन तक बढ़ गई। इंडोनेशिया में जुलाई से बायो-डीजल में पामतेल के बढ़ते उपयोग और मलेशिया में निर्यात में वृद्धि ने पाम और पामोलीन तेल के दामों को मजबूती दी। कपास नरमा की आवक घटने और मूंगफली तेल महंगा होने के कारण बिनौला तेल की मांग बढ़ी।

इसके चलते बिनौला तेल के दाम भी मजबूती के साथ बंद हुए, जबकि बाजार में कुल मिलाकर तेल-तिलहन विविधता में हलचल रही। सूत्रों ने बताया कि बीते सप्ताह सरसों दाना 100 रुपये की गिरावट के साथ 6,925-6,950 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ। दादरी मंडी में बिकने वाला सरसों तेल 100 रुपये की गिरावट के साथ 14,725 रुपये प्रति क्विंटल, सरसों पक्की और कच्ची घानी तेल का भाव क्रमशः 20-20 रुपये की गिरावट के साथ क्रमशः 2,440-2,540 रुपये और 2,440-2,585 रुपये टिन (15 किलो) पर बंद हुआ। समीक्षाधीन सप्ताह में सोयाबीन दाने और सोयाबीन लूज के थोक भाव क्रमशः 75-75 रुपये के सुधार के साथ क्रमशः 5,800-5,850 रुपये और 5,475-5,550 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुए।इसी प्रकार, दिल्ली में सोयाबीन तेल 375 रुपये के सुधार के साथ 16,825 रुपये प्रति क्विंटल, इंदौर में सोयाबीन तेल 475 रुपये के सुधार के साथ 16,225 रुपये और सोयाबीन डीगम तेल का दाम 175 रुपये के सुधार के साथ 13,475 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ। मूंगफली तिलहन का दाम 50 रुपये की मजबूती के साथ 7,300-7,775 रुपये क्विंटल, मूंगफली तेल गुजरात 100 रुपये के सुधार के साथ 17,650 रुपये क्विंटल और मूंगफली साल्वेंट रिफाइंड तेल 15 रुपये की मजबूती के साथ 2,785-3,085 रुपये प्रति टिन पर बंद हुआ। समीक्षाधीन सप्ताह में कारोबारी धारणा में आम मजबूती के रुख के अनुरूप, सीपीओ तेल का दाम 100 रुपये के सुधार के साथ 13,725 रुपये प्रति क्विंटल, पामोलीन दिल्ली का भाव 250 रुपये सुधरकर 15,675 रुपये प्रति क्विंटल तथा पामोलीन एक्स कांडला तेल का भाव भी 250 रुपये की बढ़ोतरी के साथ 14,625 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ।तेजी के आम रुख के अनुरूप, बिनौला तेल का दाम 600 रुपये के सुधार के साथ 15,450 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

आईपीएल 2026: सनराइजर्स हैदराबाद को हराकर लखनऊ सुपर जाएंट्स ने दर्ज की जीत, ऋषभ पंत की बेहतरीन पारी

हैदराबाद (एजेंसी)। आईपीएल 2026 का 10वां लीग मैच सनराइजर्स हैदराबाद और लखनऊ सुपर जाएंट्स के बीच खेला गया। जिसे लखनऊ सुपर जाएंट्स ने 1 गेंद शेष रहते हुए 5 विकेट से अपने नाम किया। ये मुकाबला आखिरी ओवर तक रोमांचक रहा। इस दौरान लखनऊ के कप्तान ऋषभ पंत ने दमदार अर्धशतकीय पारी खेली। जबकि मोहम्मद शमी, प्रिंस यादव और आवेश खान ने 2-2 विकेट अपने नाम किए।

वहीं टॉस गंवा कर पहले बल्लेबाजी करने उतरी सनराइजर्स हैदराबाद ने हेनरिक क्लासेन और नीतिश कुमार रेड्डी के अर्धशतकों के दम पर 156 रन बनाए। जिसके जवाब में लखनऊ ने 5 विकेट खोकर 19.5 ओवर में 157 रनों का टारगेट चेज कर लिया। इस दौरान पंत ने 68 रन बनाकर नाबाद लौटे।

इस दौरान एडेन मार्करम और मिचेल मार्श की जोड़ी ने पहले विकेट के लिए 37 रन की साझेदारी की। मार्श ने 12 गेंदों पर 14 रन बनाकर आउट हुए वहीं मार्करम ने 27 गेंदों पर 45 रन का योगदान दिया। उन्होंने 6 और 2 छक्के जड़े। आयुष बडोनी 12 रन बनाकर आउट हुए वहीं निकोलस पूरन एन रन बनाकर रनआउट हो गए। पंत ने 50 गेंदों पर नाबाद 68 रन बनाए। उन्होंने चौका जड़कर टीम को पहली जीत दिलाई। पंत ने अपनी मैच विनिंग पारी में 9 चौके लगाए।

इससे पहले शमी के करिश्माई स्पैल के बाद हेनरिक क्लासेन और नीतिश कुमार रेड्डी की आक्रामक शतकीय साझेदारी की बदौलत सनराइजर्स हैदराबाद ने लखनऊ सुपर जाएंट्स के खिलाफ 9 विकेट पर 156 रन बनाए। शुरुआती 10 ओवर में 35 रन पर चार विकेट गंवाकर संघर्ष कर रही हैदराबाद के लिए क्लासेन और नीतिश रेड्डी ने आक्रमण ही सर्वश्रेष्ठ बचाव की रणनीति पर अमल किया। दोनों बल्लेबाजों ने पांचवें विकेट के लिए 63 गेंदों में 116 रन की रिकॉर्ड साझेदारी के दौरान सात छक्के जड़े। दोनों के जल्दी- जल्दी आउट होते ही लखनऊ ने मैच पर फिर से पकड़ बना ली और मेजबान टीम को 160 रन से नीचे रोकने में सफलता हासिल की।

एक दिवसीय वर्ल्ड कप 2027 पर हार्दिक पांड्या की नजर

– 10 ओवर गेंदबाजी के लिए कर रहे खास तैयारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय टीम के स्टार ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या ने अभी से वनडे वर्ल्ड कप 2027 की तैयारियां शुरू कर दी हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक पांड्या ने चयनकर्ताओं और टीम मैनेजमेंट को स्पष्ट कर दिया है कि वह 2027 विश्व कप का हिस्सा बनना चाहते हैं। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए वह पिछले कुछ महीनों से अपनी गेंदबाजी पर खास काम कर रहे हैं। टीम मैनेजमेंट और सिलेक्टर्स की सबसे बड़ी शर्त यह है कि पांड्या वनडे क्रिकेट में जरूरत पड़ने पर पूरे 10 ओवर गेंदबाजी करने के लिए पूरी तरह फिट रहें। हालांकि हर मैच में उनसे पूरा स्पेल नहीं कराया जाएगा, लेकिन टीम को जब जरूरत हो, तब वह यह जिम्मेदारी निभा सकें। यही कारण है कि पांड्या अपनी फिटनेस और वर्कलोड मैनेजमेंट पर विशेष ध्यान दे रहे हैं।

इस दिशा में उनकी प्रगति का संकेत विजय हजारे ट्रॉफी में देखने को मिला, जहां उन्होंने चंडीगढ़ के खिलाफ मुकाबले में पूरे 10 ओवर गेंदबाजी करते हुए तीन विकेट झटके। इस प्रदर्शन ने यह साफ कर दिया कि वह लंबा स्पेल डालने के लिए खुद को तैयार कर रहे हैं। इससे पहले न्यूजीलैंड के खिलाफ वनडे सीरीज में उन्हें इसी वजह से शामिल नहीं किया गया था क्योंकि तब वह 10 ओवर गेंदबाजी के लिए पूरी तरह फिट नहीं माने गए थे। वर्ल्ड कप 2027 दक्षिण अफ्रीका में खेला जाएगा, जहां की पिचें तेज गेंदबाजों के लिए मददगार मानी जाती हैं। ऐसे में हार्दिक पांड्या जैसे सीम-बॉलिंग ऑलराउंडर की भूमिका टीम के लिए बेहद अहम हो सकती है। हालांकि, चयनकर्ता उनकी फिटनेस को लेकर सतर्क हैं, क्योंकि वह पहले भी चोट के कारण लंबे समय तक टीम से बाहर रह चुके हैं।

पांड्या के बैकअप के तौर पर चयनकर्ताओं की नजर नितीश कुमार रेड्डी पर भी बनी हुई है। उन्होंने भी घरेलू क्रिकेट में अपनी गेंदबाजी पर काम किया है और वर्कलोड बढ़ने की कोशिश कर रहे हैं। अगर पांड्या के पिछले रिकॉर्ड पर नजर डालें, तो 2018 में दक्षिण अफ्रीका दौरे पर उन्होंने 6 वनडे मैचों में 44 ओवर गेंदबाजी कर 4 विकेट लिए थे और उनका इकॉनमी रेट 4.90 रहा था। हालांकि बल्लेबाजी में वह ज्यादा प्रभाव नहीं छोड़ सके थे। कुल मिलाकर, हार्दिक पांड्या का फोकस साफ है फिटनेस, निरंतरता और ऑलराउंड प्रदर्शन के दम पर वह 2027 वर्ल्ड कप में टीम इंडिया के लिए अहम भूमिका निभाना चाहते हैं।

ऑरेंज कैप और पर्पल कैप की दौड़ में समीर, बिश्नोई शीर्ष पर पहुंचे

मुम्बई (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2026 के अब तक हुए मुकाबलों के बाद सबसे अधिक रनों के लिए मिलने वाली ऑरेंज कैप और सबसे अधिक विकेट के लिए मिलने वाली पर्पल कैप के लिए दावेदार सामने आये हैं। आईपीएल में अबतक 9 मुकाबलों के बाद ऑरेंज कैप की दौड़ में दिल्ली कैपिटल्स के समीर रिजवी शीर्ष पर पहुच गये हैं। उनके पीछे ईशान किशन और रोहित शर्मा के अलावा आयुष म्हात्रे, अंगकृष रघुवंशी भी हैं। वहीं पर्पल कैप की दौड़ में रवि बिश्नोई पहले नंबर पर हैं उनके पीछे विजयकुमार वैशाख, टी नटराजन, लुंगी एनगिडी, जयदेव उनादकट और प्रसिद्ध कृष्णा हैं।

पिछले सीजन के पर्पल कैप विजेता प्रसिद्ध कृष्णा ने इस बार भी बेहतर प्रदर्शन कर दौड़ में अपने को बरकरार रख हैं। इस बार समीर और आयुष जैसे नये खिलाड़ी भी पुरस्कार की दौड़ में शामिल हैं।

ऑरेंज कैप के पहले नंबर के दावेदार

समीर ने 2 मैचों में 160 रन बनाए हैं, दोनों मुकाबलों में अर्धशतक लगाया है। वे जाहिर तौर पर ऑरेंज कैप के बड़े दावेदार दिख रहे हैं। वहीं मुंबई इंडियंस के रोहित ने एक अर्धशतक सहित 113 रन बनाए लिए हैं। वहीं केकेआर के अंगकृष रघुवंशी ने अब तक दोनों मैचों में अर्धशतक लगाते हुए कुल 103 रन बना लिए हैं। पंजाब किंग्स के कूपर कॉनोली ने भी बेहतरीन बल्लेबाजी कर 108 रन बनाये हैं।

वहीं पर्पल कैप की बात करें तो रवि बिश्नोई के पांच विकेट हैं और वह सबसे आगे हैं। प्रसिद्ध कृष्णा 4 विकेट के साथ ही दूसरे नंबर पर हैं।

आईपीएल में आज होगा केकेआर और पंजाब किंग्स का मुकाबला

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) की टीम सोमवार को आईपीएल में अपने तीसरे मुकाबले मे पंजाब किंग्स के खिलाफ ईडन गार्डन में जीत की उम्मीद से उतरेगी। केकेआर का लक्ष्य किसी प्रकार ये मैच जीतकर अपना खाता खोलना रहेगा। 2024 की विजेता केकेआर के लिए अब तक का सत्र बेहद खराब रहा है और उसे अपने दोनो ही मैचों में हार का सामना करना पड़ा है। पहले मैच में उसे मुम्बई इंडियंस जबकि दूसरे मैच में सनराइजर्स से हार का सामना करना पड़ा है। इससे टीम पर काफी दबाव है। वहीं दूसरी ओर पंजाब किंग्स अपने शुरुआती दोनो मैच जीतकर उत्साह से भरी है उसने पहले मैच में गुजरात टाइटंस और दूसरे मैच में चेन्नई सुपरकिंग्स को हराया था। वहीं आंकड़ों पर नजर डालें तो केकेआर और पंजाब किंग्स के बीच आईपीएल में कड़ी टक्कर हुई है, जिसमें कुल 35 मैचों में से केकेआर ने 21 और पंजाब ने 13 मैच जीते हैं पर ईडन में केकेआर हावी रही है उसने यहां 14 में से 9 मैच जीते हैं। केकेआर की कप्तानी आजिंक्य रहाणे जबकि पंजाब की श्रेयस अय्यर कर रहे हैं।

केकेआर की गेंदबाजी इस बार कमजोर है। उसे हर्षित राणा, आकाश दीप और मथीशा पथिराना जैसे तेज गेंदबाजों के बिना उतरना पड़ रहा है। इसके अलावा उसके कप्तान रहाणे की रणनीति भी अबतक विफल रही है। कप्तान के तौर पर रहाणे ने सबसे अधिक रन बनोय हैं पर वह टीम को प्रेरित नहीं कर पाये हैं। टीम के अन्य बल्लेबाजी बड़ी पारी नहीं खेल पाये हैं। फिन एलेन, टिम सीफर्ट और रचिन रविंद्र जैसे बल्लेबाजों का भी केकेआर सही तरीके से प्रयोग नहीं कर पायी है। अब तक केवल सिर्फ एलेन को मौका मिला है जबकि सीफर्ट और स्पिन गेंदबाजी ऑलराउंडर रविंद्र अबक अंतिम ग्यारह से बाहर हैं। केकेआर के सुनील नारायण भी इस बार प्रभावित नहीं कर पाये। ऑलराउंडर कैमरन ग्रीन केवल बल्लेबाजी ही कर रहे है और गेंदबाजी नहीं कर रहे जिसका नुकसान कभी केकेआर को हो रहा है। इसके अलावा रोवमैन पावेल को भी अंतिम ग्यारह में अब तक अवसर नहीं मिला है। टीम के लिए राहत की बात ये है कि युवा कार्तिक त्यागी और युवा अंगकृष रघुवंशी का प्रदर्शन अच्छा रहा है पर इसके बाद भी टीम की बल्लेबाजी बेहद सामान्य रही है। रहाणे के सलामी बल्लेबाज के रूप में उतरने से भी कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा है। पांचवें नंबर के बाद बल्लेबाज क्रम कमजोर हुआ है। अपने मैच में केकेआर टीम सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ 16 ओवर में 161 रन ही बना पायी निचले मध्य क्रम में रमनदीप सिंह और अनुकूल रॉय भी विफल रहे हैं। दूसरी ओर श्रेयस की कप्तानी में पंजाब के खिलाड़ियों ने अच्छा प्रदर्शन किया है। युवा कूपर कोनोली ने दो मैच में 108 रन बनाकर तीसरे नंबर पर प्रभावित किया है जबकि प्रियांश आर्य और प्रभसिमरन सिंह ने भी टीम को अच्छी शुरुआत दी है। अय्यर ने बीच के ओवरों में अच्छीसाथ बल्लेबाजी की है। वहीं गेंदबाजी की बात करें तो अर्शदीप सिंह, मार्को यानसेन और विजयकुमार वैशाख के होने से गेंदबाजी बेहतर हुई है। स्पिन की कमान लेग स्पिनर युजवेंद्र चहल संभालेंगे। कुल मिलाकर इस मैच में देखा जाये तो पंजाब का पलड़ा भारी है और वह अपने जीत के सिलसिले को बरकरार रखने उतरेगी।

दोनो ही टीमें इस प्रकार हैं

कोलकाता नाइट राइडर्स : अजिंक्य रहाणे (कप्तान), रिंकू सिंह (उपकप्तान), फिन एलेन, तेजस्वी दहिया, मनीष पांडे, रोवमैन पावेल, अंगकृष रघुवंशी, रमनदीप सिंह, सार्थक रंजन, टिम सीफर्ट, राहुल त्रिपाठी, दक्ष कामरा, कैमरन ग्रीन, सुनील नारायण, रचिन रविंद्र, वरुण चक्रवर्ती, अनुकूल रॉय, वैभव अरोड़ा, सौरभ दुबे, कार्तिक त्यागी, ब्लेसिंग मुजरबानी, नवदीप सैनी, प्रशांत सोलंकी और उमरान मलिक।

पंजाब किंग्स : श्रेयस अय्यर (कप्तान), प्रियांश आर्य, हरनूर सिंह, मिचेल ओवेन, विष्णु विनोद, निहाल वढेरा, अजमतुल्लाह उमरजई, मार्को यानसेन, मार्कस स्टोइनिस, अर्शदीप सिंह, जेवियर बार्टलेट, युजवेंद्र चहल, लॉकी फर्ग्युसन, हरप्रीत बरार, विजयकुमार वैशाख, यश ठाकुर, कूपर कोनोली, बेन ड्वारशुइस, मुशीर खान, प्रवीण दुबे, विशाल निषाद, सूर्यांश शेडगे, प्रभसिमरन सिंह, पायला अविनाश और शशांक सिंह।

सूर्यकुमार ने हार पर निराशा जतायी, हम 15 से 20 रन कम बना पाये

नई दिल्ली । सूर्यकुमार यादव ने मुंबई इंडियंस को आईपीएल के दूसरे ही मैच में दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ मिली हार पर निराशा जताया है । नियमित कप्तान हार्दिक पंड्या के फिट नहीं होने के कारण सूर्या ने इस मैच में टीम की कप्तानी की थी । सूर्या के अनुसार इस मैच में उनकी टीम अगर 15 से 20 रन और बनाती तो परिणाम कुछ और होता । सूर्यकुमार ने कहा, जब आप पहले बल्लेबाजी कर रहे होते हैं, तो कितना स्कोर पर्याप्त रहेगा । इस बारे में नहीं जान सकते हैं । आप बस बल्लेबाजी करते रहते हैं । बाद में अंदाजा आया कि 180 से 185 एक अच्छा स्कोर होता । हम 15 से 20 रन पीछे रह गए । जहां तक विकेट की बात है वह ठीक था । फिर भी बल्लेबाजी को देखें हम 15–20 रन पीछे रह गए । हालांकि गेंदबाजों से अपनी भूमिका ठीक से निभाई । सूर्यकुमार ने इस मैच में 51 रन बनाये पर इसके बाद भी उनकी टीम 6 विकेट पर 162 रन ही बना पायी । नमन ने भी 21 गेंदों में 28 रन बनाये । मुम्बई की बल्लेबाजी को लेकर सूर्यकुमार ने कहा, मैं और नमन, हम दोनों गलत समय पर आउट हो गए, अगर ऐसे नहीं होते तो हम औसत से अधिक स्कोर बना देते । साथ ही कहा कि ऐसा भी होता है जब प्रयास के बाद भी सफलता नहीं मिलती ।

शुभमन के अगले मैच तक फिट होने की संभावना : पार्थिव पटेल

मुम्बई । गुजरात टाइटंस के सहायक कोच पार्थिव पटेल के अनुसार कप्तान शुभमन गिल के अगले मैच में खेलने की काफी संभावनाएं हैं । शुभमन चोटिल होने के कारण राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ मैच से बाहर रहे थे । इस मैच में टीम को उनकी कमी खली थी । इसी कारण प्रशंसक उम्मीद कर रहे हैं कि शुभमन अगले मैच तक फिट हो जाएंगे । इसी को लेकर पार्थिव ने कहा, इंजरी मैनेजमेंट के बारे में मुझे जानकारी नहीं है पर मैं इतना जरूर कह सकता हूं कि वह ठीक हो जाएंगे । इससे अंदाजा होता है कि कि शुभमन की चोट अधिक गंभीर नहीं है । पार्थिव ने कहा कि शुभमन को कुछ दिन पहले ही मांसपेशियों में खिंचाव आया था । जिसके कारण उन्हें पिछले मैच में जगह नहीं दी गयी थी । उन्होंने कहा, उन्हें पहले गर्दन में मोच आई थी और कुछ दिन पहले मांसपेखी में खिंचाव आया था । हमें उम्मीद है कि वह अगले मैच तक फिट हो जाएंगे । यह चोट ज्यादा गंभीर नहीं लग रही है । टीम प्रबंधन उनकी फिटनेस पर नजर रख रहे हैं । गिल के बाहर होने से पिछले मैच में टीम की कप्तानी राशिद खान ने संभाली थी पर वह टीम को जीत नहीं दिला पाये । वहीं मैच के बाद राशिद ने भी शुभमन की फिटनेस को लेकर कहा, वह ठीक हैं । उम्मीद है कि अगले मैच तक पूरी तरह फिट हो जाएंगे । उन्हें केवल मांसपेशी में खिंचाव है । इसलिए उम्मीद है कि वह जल्द वापसी करेंगे । शुभमन जैसे बेहतरीन बल्लेबाज के होने से टीम बड़ा स्कोर बना सकती है । गुजरात टाइटंस का अगला मैच 8 अप्रैल को दिल्ली कैपिटल्स से होगा । गुजरात की टीम अभी तक दोनों मैच हार चुकी है, जबकि दिल्ली ने अपने दोनों मैच जीते हैं । ऐसे में टीम को जीत की राह पर लौटने के लिए शुभमन की वापसी बेहद जरूरी मानी जा रही है ।

आईपीएल 2026: 'अब टी20 में फिनिशर जैसी कोई भूमिका नहीं', स्टीफन फ्लेमिंग का बड़ा बयान

चेन्नई (एजेंसी)। चेन्नई सुपर किंग्स के मुख्य कोच स्टीफन फ्लेमिंग का मानना है कि आधुनिक टी20 क्रिकेट में पारंपरिक फिनिशर की भूमिका अब पहले जैसी अहम नहीं रह गई है। उनका कहना है कि आज के खेल में बल्लेबाज शुरुआत से ही आक्रामक रुख अपनाते हैं, जिससे मैच का स्वरूप पूरी तरह बदल गया है। पंजाब किंग्स के खिलाफ मिली हार के बाद फ्लेमिंग ने कहा कि अब टी20 क्रिकेट में हर बल्लेबाज पहली ही गेंद से बड़े शॉट खेलने की कोशिश करता है। पहले जहां टीमें 15-16 ओवर तक पारी को संभालकर खेलती थीं और अंत में तेजी लाती थीं, अब ऐसा नहीं है। उन्होंने कहा कि मौजूदा दौर में शुरुआत से ही 10-12 रन प्रति ओवर की दर बनाए रखना जरूरी हो गया है, इसलिए टीमों को ऐसे बल्लेबाजों की जरूरत है जो पूरे मैच में आक्रामक खेल सकें।

सीएसके की टीम संरचना पर बात करते हुए फ्लेमिंग ने माना कि टीम में टॉप ऑर्डर बल्लेबाजों की संख्या ज्यादा है, जिससे मिडिल और लोअर ऑर्डर में पारंपरिक फिनिशर की कमी महसूस हो सकती है। हालांकि उन्होंने भरोसा जताया कि टीम के पास पर्याप्त बल्लेबाजी ताकत मौजूद है। उन्होंने बताया कि डेवाल्ड ब्रेविस चोट के कारण बाहर हैं, जबकि महेंद्र सिंह धोनी भी फिट नहीं हैं। इन दोनों की अनुपस्थिति टीम के संतुलन को प्रभावित कर रही है। फ्लेमिंग ने संजू सैमसन का भी समर्थन किया, जो शुरुआती मुकाबलों में उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन नहीं कर पाए हैं। उन्होंने कहा कि सैमसन नेट्स में अच्छा अभ्यास कर रहे हैं और जब वह फॉर्म में आते हैं तो मैच का रुख बदलने की क्षमता रखते हैं। इसलिए उनके खराब प्रदर्शन को लेकर ज्यादा चिंता करने की जरूरत नहीं है।

कोच ने 'इम्पैक्ट प्लेयर' नियम पर भी सवाल उठाते हुए कहा कि इससे खेल का संतुलन बल्लेबाजों के पक्ष में झुक गया है। उनका मानना है कि इस नियम ने मैच की गति और रणनीति दोनों को प्रभावित किया है, जिससे गेंदबाजों के लिए चुनौती बढ़ गई है। वहीं, पंजाब किंग्स के युवा बल्लेबाज प्रियांश आर्य की तेज पारी की भी चर्चा रही। इस पर उनके साथी शशांक सिंह ने कहा कि प्रियांश मानसिक रूप से बेहद मजबूत खिलाड़ी हैं और अपनी भूमिका को अच्छी तरह समझते हैं। उन्होंने कम उम्र में जिस तरह की परिपक्वता दिखाई है, वह काबिल-ए-तारीफ है। कुल मिलाकर, फ्लेमिंग का मानना है कि टी20 क्रिकेट का नया दौर पूरी तरह आक्रामक बल्लेबाजी का है, जहां हर खिलाड़ी को शुरुआत से अंत तक तेज रन बनाने की जिम्मेदारी निभानी होती है।

मेसी और सुआरेज के गोल से इंटर मियामी ने ऑस्टिन एफसी के साथ 2–2 से ड्रॉ खेला

नई दिल्ली । इंटर मियामी सीएफ ने 5 अप्रैल को मियामी के बीचों–बीच बने अपने नए और आधुनिक स्टेडियम में ऐतिहासिक होम ओपनर खेला । इंटर मियामी का मुकाबला ऑस्टिन एफसी से था । मैच 2–2 की बराबरी पर समाप्त हुआ । मैच की शुरुआत में ऑस्टिन एफसी ने आक्रामक रुख अपनाते हुए छठे मिनट में बढ़त हासिल कर ली ।

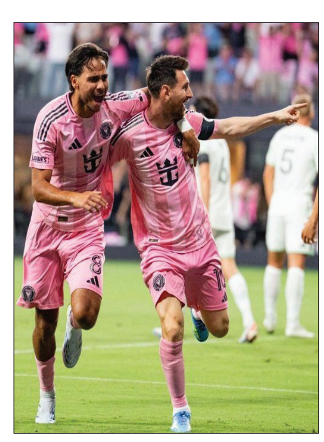

गुइलहर्मे बिरो ने शानदार गोल दागकर मेहमान टीम को 1–0 से आगे कर दिया । हालांकि, इंटर मियामी ने जल्द ही वापसी की । टीम के कप्तान लियोनल मेसी ने बॉक्स के अंदर से बेहतरीन हेडर लगाकर क्लब का पहला ऐतिहासिक गोल किया और स्कोर 1–1 कर दिया । यह इस एमएलएस सीजन में मेसी का पहला गोल भी रहा । पहले हाफ के अंत तक दोनों टीमें बराबरी पर रहीं, लेकिन दूसरे हाफ में ऑस्टिन ने 53वें मिनट में एक और गोल कर बढ़त बना ली । इससे इंटर मियामी पर दबाव बढ़ गया, लेकिन टीम ने हार नहीं मानी । मैच के अंतिम चरण में कोच जेवियर माशेरानो ने रणनीतिक बदलाव करते हुए लुइस सुआरेज को मैदान पर उतारा । सुआरेज ने कोच के भरोसे को सही साबित करते हुए 82वें मिनट में कॉर्नर के बाद शानदार गोल कर स्कोर 2–2 से बराबर कर दिया । यह इस सीजन में उनका पहला गोल था और इसी के साथ इंटर मियामी ने अपने नए स्टेडियम में कम से कम एक अंक सुनिश्चित कर लिया । मैच के बाद माशेरानो ने स्वीकार किया कि टीम ने आखिरी 20–25 मिनट में काफी जोखिम उठाए, लेकिन घरेलू मैदान पर आक्रामक खेल दिखाना जरूरी था । उन्होंने यह भी कहा कि टीम अपने चैंपियन होने का दर्जा बनाए रखना चाहती है । पहला मैच ड्रॉ रहने के बावजूद इंटर मियामी के लिए यह एक सकारात्मक शुरुआत रही । क्लब पहले ही एमएलएस कप 2025, 2024 सपोर्टर्स शील्ड, और लीग्स कप 2023 जैसे बड़े खिताब जीत चुका है, और अब वह इस नई शुरुआत को और भी यादगार बनाने के इरादे से आगे बढ़ रहा है ।

हेनरिच क्लासेन ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में वापसी से किया इनकार

नई दिल्ली । दक्षिण अफ्रीका के विस्फोटक बल्लेबाज हेनरिच क्लासेन ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में वापसी की संभावनाओं को खत्म करते हुए साफ कर दिया है कि वह अब दोबारा राष्ट्रीय टीम के लिए नहीं खेलेंगे । 34 वर्षीय क्लासेन ने यह फैसला अपने परिवार को प्राथमिकता देने के कारण लिया है । गौरतलब है कि केंद्रीय अनुबंध नहीं मिलने के बाद उन्होंने पिछले साल जून में क्रिकेट के सभी अंतरराष्ट्रीय प्रारूपों से संन्यास ले लिया था और तब से वह दुनियाभर की टी20 लीग में सक्रिय हैं । हाल ही में इंडियन प्रीमियर लीग से जुड़े एक वीडियो में क्लासेन ने नीतिश कुमार रेड्डी के साथ बातचीत के दौरान अपने फैसले का खुलासा किया । उन्होंने बताया कि वापसी को लेकर उन्होंने करीब दो हफ्तों तक गंभीरता से विचार किया, लेकिन अंततः यह तय किया कि अब अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में लौटना सही नहीं होगा । क्लासेन ने स्वीकार किया कि टी20 विश्व कप के दौरान अपने साथियों को अच्छा प्रदर्शन करते देख उनके मन में वापसी का विचार जरूर आया था । उन्होंने कहा कि उस समय उन्हें महसूस हुआ कि वह टीम का हिस्सा क्यों नहीं हैं और उन्होंने दोबारा खेलने की इच्छा भी जताई थी । इस दौरान उन्होंने दक्षिण अफ्रीकी कप्तान एडन मार्करम से भी बातचीत की थी । हालांकि, क्लासेन ने बताया कि बातचीत के बाद भी स्थिति स्पष्ट नहीं हो पाई और विश्व कप के बाद उन्हें यह एहसास हुआ कि उनकी वापसी की संभावना कम है । इसके चलते उन्होंने दोबारा अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट न खेलने का अंतिम निर्णय ले लिया । बता दें कि क्लासेन ने 2024 में ही टेस्ट क्रिकेट को अलविदा कह दिया था और अब वह पूरी तरह से फ्रेंचाइजी क्रिकेट पर फोकस कर रहे हैं । उनका यह फैसला दिखाता है कि आधुनिक क्रिकेट में खिलाड़ी अपने करियर और निजी जीवन के बीच संतुलन को कितना महत्व देने लगे हैं ।

टॉमी पॉल ने टियाफो को हराकर पहले एटीपी टूर क्ले फाइनल में जगह बनाई

ह्यूसटन । टॉमी पॉल ने 5 अप्रैल को ह्यूस्टन में यूएस मेन्स क्ले कोर्ट चैंपियनशिप के सेमीफाइनल में फ्रांसिस टियाफो को हराकर अपने पहले एटीपी टूर क्ले फाइनल में जगह बनाई । अमेरिकी खिलाड़ी ने तीन सेट तक चले रोमांचक मुकाबले में 7–5, 4–6, 7–6(7) से जीत हासिल की । इस जीत के साथ, पॉल ने ह्यूस्टन में एटीपी 250 इवेंट में लगातार चौथे चैंपियनशिप मैच में पहुंचने की उम्मीदों को समाप्त कर दिया । मैच लगभग दो घंटे और 45 मिनट तक चला । मैच की शुरुआत पॉल ने बेहतरीन खेल से की और पहला सेट 7–5 से जीत लिया । टियाफो ने दूसरे सेट में जल्दी ब्रेक लेकर मुकाबले में वापसी की और सेट 6–4 से अपने नाम किया । मैच के दौरान 90 मिनट की बारिश की देरी ने पॉल के मोमेंटम को थोड़ा बाधित किया, लेकिन उन्होंने फिर भी मजबूती दिखाते हुए ब्रेक पॉइंट बचाया और सेट को अपने पक्ष में किया । तीसरे सेट में दोनों खिलाड़ियों ने कड़ा संघर्ष किया । टियाफो ने शुरुआती ब्रेक लिया, लेकिन पॉल ने वापसी की और 4–2 से बढ़त बनाई । टियाफो ने फिर 4–4 से बराबरी कर ली, जिससे मुकाबला टाई–ब्रेक में चला गया । टाई–ब्रेक में पॉल 6/4 से आगे थे, लेकिन टियाफो ने दो मैच पॉइंट बचाए । अंततः चौथे सीड वाले पॉल ने अंतिम गेम में दबाव में रहते हुए रोमांचक मुकाबला अपने नाम किया । पॉल ने मैच के बाद कहा, 'जब मुझे जरूरत थी, मैंने अच्छा खेला । यह टियाफो के साथ एक शानदार मुकाबला था । वह हमेशा देखने में सबसे एंटरटेनिंग खिलाड़ियों में से रहे हैं । मुझे खुशी है कि हमें यह मैच यहां खेलने का मौका मिला ।' अब पॉल फाइनल में रोमन एंड्रेस बुरुचागा का सामना करेंगे । बुरुचागा ने सेमीफाइनल में अपने ही देश के खिलाड़ी थियागो अगस्टिन तिरांटे को 6–1, 6–1 से हराकर पहले एटीरी टूर फाइनल में प्रवेश किया ।

आईपीएल 2026: 'पिछला सीजन काफी खराब रहा', भारतीय स्पिनर ने खुद बताई अपनी बड़ी कमजोरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2026 में शानदार प्रदर्शन करने वाले भारतीय स्पिनर रवि बिश्नोई ने अपने खराब पिछले सीजन और अपनी सबसे बड़ी कमजोरी को लेकर खुलकर बात की है। राजस्थान रॉयल्स के लिए शानदार प्रदर्शन के बाद बिश्नोई ने बताया कि उन्होंने घरेलू क्रिकेट में अपनी गेंदबाजी की सबसे बड़ी कमी पर काम किया, जिसका फायदा अब आईपीएल में मिल रहा है।

पिछला सीजन रहा मुश्किल

रवि बिश्नोई ने मैच के बाद कहा कि 'पिछला सीजन काफी कठिन रहा था, लेकिन मैंने अपने प्रोसेस पर भरोसा रखा।' उन्होंने कहा कि अगर उनकी लेंथ सही नहीं होती थी तो बल्लेबाज उन्हें आसानी से चौके-छक्के मार देते थे। यही उनकी सबसे बड़ी कमजोरी थी, जिस पर उन्होंने पूरे घरेलू सीजन में काम किया।

बिश्नोई ने बताया कि 'जब उनकी लेंथ सही जगह पर पड़ती है तो बल्लेबाजों के लिए रन बनाना मुश्किल हो जाता है, लेकिन जब गेंद ज्यादा फुल हो जाती है तो उन्हें मार पड़ती है।'

घरेलू क्रिकेट में किया सुधार

बिश्नोई ने बताया कि उन्होंने ऑफ सीजन और घरेलू क्रिकेट के दौरान अपनी गेंदबाजी पर काफी मेहनत की। उन्होंने मानसिक, तकनीकी और शारीरिक - तीनों पहलुओं पर काम किया, जिसका परिणाम अब देखने को मिल रहा है।

आईपीएल में शानदार वापसी

आईपीएल 2026 में रवि बिश्नोई ने शानदार प्रदर्शन करते हुए गुजरात टाइटंस के खिलाफ मैच में चार महत्वपूर्ण विकेट लिए और प्लेयर ऑफ द मैच भी बने। यह गुजरात के खिलाफ किसी स्पिनर का बेहतरीन प्रदर्शन भी रहा।

LSG के लिए ऐसा रहा प्रदर्शन

रवि बिश्नोई 2022 में लखनऊ सुपर जायंट्स से जुड़े थे। पहले दो सीजन में उन्होंने 13 और 16 विकेट लिए, लेकिन इसके बाद उनका प्रदर्शन गिर गया। आईपीएल 2024 में उन्होंने 14 मैच में 10 विकेट लिए, जबकि पिछले सीजन में 11 मैच में सिर्फ 9 विकेट ही ले सके और उनका इकॉनमी रेट भी काफी ज्यादा रहा।

पर्पल कैप की रेस में आगे

आईपीएल 2026 में बिश्नोई शानदार फॉर्म में हैं और दो मैचों में पांच विकेट लेकर पर्पल कैप की रेस में आगे चल रहे हैं। अब उनका अगला मुकाबला मुंबई इंडियंस के खिलाफ 7 अप्रैल को गुवाहाटी में खेला जाएगा।

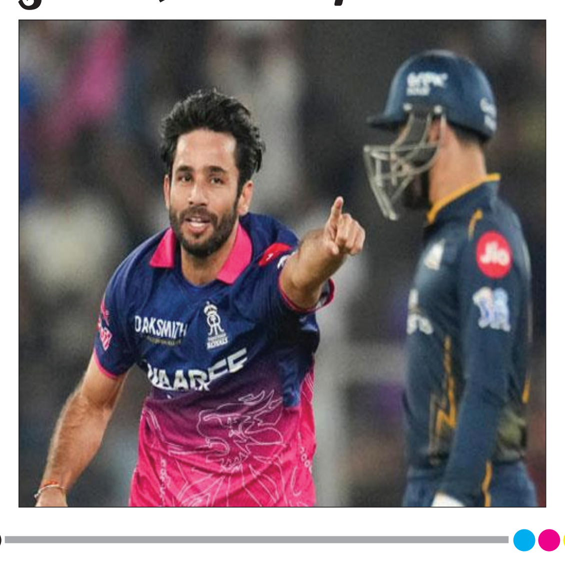

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

आशावादी बनिए

एडिसन की प्रयोगशाला एक अग्निकांड में पूरी तरह से जल कर ध्वस्त हो गई। उनके जीवन भर की शोध सामग्री और बहुमूल्य उपकरण सब खाक हो गए। आर्थिक क्षति भी बहुत हुई। यदि कोई सामान्य व्यक्ति होता तो उस हादसे से आसानी से उबर नहीं पाता, किंतु एडिसन ने कहा, इसमें हमारी भूलें भी जल कर नष्ट हो गई हैं। हमें ईश्वर का कृतज्ञ होना चाहिए, अब हम नए सिरे से जीवन को शुरू कर सकते हैं। इन सब के बीच व्यक्ति की जीवन यात्रा उत्थान की दिशा में बढ़ रही है या पतन की दिशा में, इसमें उस व्यक्ति के दृष्टिकोण की भूमिका सबसे बड़ी होती है।

भाग्य को न कोसें

हम में से अधिकांश लोग ऐसी स्थिति में अपने दु:ख-दर्द एवं दुर्भाग्य के लिए भाग्य को कोसते हैं या फिर दूसरों को दोषी मानते हैं। और नहीं तो भगवान पर ही गुस्सा निकालने लगते हैं। एडिसन ने भगवान को कोसने की बजाय उसका धन्यवाद किया। जैसे ही हमारा जीवन के प्रति दृष्टिकोण बदलने लगता है, तो स्थिति पलटने लगती है। आशा मनुष्य की सबसे बड़ी संपदा है।

हमारे जीवन में प्रयास, पुरुषार्थ, अवरोध एवं संघर्ष का लगातार एक क्रम चलता रहता है। और ऐसे में सफलताएं भी मिलती हैं और विफलताएं भी। लेकिन अगर आप हमेशा आशावादी बने रहेंगे तो नित नई ऊंचाइयां प्राप्त करते रहेंगे।

आशा उत्साह की जननी

प्रेमचंद ने एक जगह लिखा है, आशा उत्साह की जननी है। उसमें तेज है, बल है, जीवन है। आशा ही संसार की संचालन शक्ति है। यदि व्यक्ति आशा खो बैठता है तो जीवन नैया डूबने लगती है। आशा घोर अभाव और संकट के बीच भी निर्माण के तत्वों की खोज करती है। वह आभासित अभिशाप को भी वरदान में बदल देती है। ठीक इसके उलट, निराशावादी दृष्टिकोण के कारण हम अनुकूल अवसरों में भी प्रतिकूलता देखने लगते हैं। एडिसन आशावादी था, उसने अनुकूल अवसर खोजकर अपने जीवन को नए सिरे से शुरू कर लिया।

विफलता से मिलती है निराशा

इसलिए यदि घटनाएं हमारे अनुरूप नहीं घटतीं और हमें विफलता एवं निराशा का संदेश देती हैं, तो भी हिम्मत हारने एवं हताश होने की आवश्यकता नहीं। चाहे संघर्ष पथ पर हम गिर जाएं, पिट भी जाएं, तो भी यह नहीं भूलना चाहिए कि कोई भी असफलता अंतिम नहीं होती। यदि लक्ष्य के प्रति मन में लगन हो, तो विफलता भी गिर कर फिर से उठकर खड़े होने और दुगुने उत्साह के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

सफलताओं से सीखें

आशावादी व्यक्ति व्यावहारिक रुख अपनाते हुए अपने जीवन की छोटी - छोटी सफलताओं से क्रमश: आगे बढ़ता है। अपनी कार्यकुशलता और इच्छाशक्ति को क्रमश: विकसित करता जाता है। यह पद्धति रचनात्मकता का स्रोत बनकर उसे लगातार आगे बढ़ाती रहती है। निराशावादी व्यक्ति जहां एक दरवाजा बंद देखते ही अपना प्रयास छोड़ देता है, वहीं आशावादी व्यक्ति दूसरे खुले दरवाजों की तलाश में जुट जाता है। निराशावादी जहां सतत् हारता है, वहीं आशावादी अपनी तात्कालिक विफलताओं के बावजूद एक विजेता बन कर उभरता है। वास्तव में जब तक हम अपने जीवन के अर्थ एवं सुख की खोज के लिए बाहरी वस्तुओं, व्यक्तियों एवं परिस्थितियों पर निर्भर रहते हैं, तब तक निराशा का भाव भी बार-बार आता है। और जब दृष्टि अपने अंदर के मूल स्रोत की ओर मुड़ने लगती है, तो निराशा का कुहासा भी घटने लगता है।

हिम्मत न हारें

यदि हम छोटी-छोटी असफलताओं और रुकावटों से हिम्मत हार बैठते हैं और नकारात्मक भावों को जीवन में हावी होने देते हैं, तो यात्रा का हर कदम दूभर एवं कष्टप्रद बन जाता है। जीवन एक दु:खद घटना एवं दुर्भाग्यपूर्ण मजाक लगने लगता है। हमारी ऊर्जा कुंठित होने लगती है।

परमात्मा का वरदान

यहीं पर हमें परमात्मा की कृपा एवं वरदान की भाव भरी अनुभूति होती है। अपने ईमानदार प्रयास के साथ प्रभु प्रेम एवं उसके अचूक न्याय विधान के प्रति आस्था को धारण कर हम अनायास ही आस्तिकता एवं धार्मिकता के पथ पर बढ़ जाते हैं। वही हमें जीवन की सार्थकता के बोध की ओर ले चलती है।

प्रकृति का दास नहीं मनुष्य

ज्यों ही कोई विज्ञान पूर्ण एकता तक पहुंच जाएगा, त्यों ही उसकी प्रगति रुक जाएगी क्योंकि तब वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा। उदाहरणार्थ रसायनशास्त्र यदि एक बार उस मूल तत्व का पता लगा ले जिससे और सब द्रव्य बन सकते हैं तो फिर वह और आगे नहीं बढ़ेगा।

भौतिकी जब उस एक मूल शक्ति का पता लेगी, अन्य शक्तियां जिसकी अभिव्यक्ति हैं तब वह वहीं रुक जाएगी। वैसे ही धर्मशास्त्र भी उस समय पूर्णता को प्राप्त कर लेगा जब वह उसको खोज लेगा जो इस मृत्युलोक में एकमात्र जीवन है, जो इस परिवर्तनशील जगत का शाश्वत आधार है, जो एकमात्र परमात्मा है, अन्य सब आत्माएं जिसकी प्रतीयमान अभिव्यक्तियां हैं। इस प्रकार अनेकता और द्वैत में होते हुए इस परम अद्वैत की प्राप्ति होती है। धर्म इससे आगे नहीं जा सकता। यही समस्त विज्ञानों का चरम लक्ष्य है।

धर्म का प्रारंभ

धर्म का प्रारम्भ कैसे हुआ और वह क्रमश: विकास द्वारा आध्यात्मिक अद्वैतवाद की इस सीमा तक कैसे पहुंचा? क्या इसके बाद विचार के विकास पर विराम चिह्न लगा देना सम्भव है? मनुष्य मननशील प्राणी है। उसका मस्तिष्क अन्य सभी प्राणियों की अपेक्षा अधिक उन्नत है और यह मस्तिष्क ही उसकी सबसे बड़ी शक्ति है। जबकि दूसरे प्राणियों ने आत्मरक्षा की सहज प्रवृत्ति से अपने आप को प्रकृति के अनुरूप ढाला है और निरन्तर ढालता जा रहा है। मनुष्य प्रकृति का दास नहीं विजेता है। उसने अपनी विचार-शक्ति द्वारा आग, पानी, बिजली का प्रयोग करके, शस्त्र-यंत्र का आविष्कार करके और प्रकृति के नियमों की खोज लगाकर अपनी इस विजय को सम्भव बनाया। प्रकृति को बदलने में वह स्वयं भी बदला। अपने इस संघर्ष में ही वह पशु से मनुष्य, हैवान से इंसान बना।

दैविक शक्ति का हाथ

मतलब है कि उसके निर्माण में किसी दैविक शक्ति का हाथ नहीं, बल्कि अपने इस संघर्ष के दौरान देव, दानव तथा ईश्वर आदि दैवी शक्तियों का निर्माण स्वयं उसने किया। सभी विचार भौतिक परिस्थितियों से उत्पन्न हुए, मनुष्य ने उन्हें व्यवहार की कसौटी पर परखा। उनके असार तत्त्व को त्याग कर सारतत्त्व को भौतिक शक्ति में परिणत किया तथा सिद्धान्तों का रूप दिया।

प्रेम का कमल भक्ति

मन के साथ जो चला, वह कभी भगवान तक न पहुंच सकेगा। भगवान यानी जो है, भक्ति यानी जो है, उसे देखने की कला। लेकिन जो है, वह हमें दिखायी क्यों नहीं पड़ता? जो है वह तो हमें सहज दिखायी पड़ना चाहिए। जो है उसे खोजने की जरूरत ही क्यों हो? जो है उसे हम भूले ही क्यों, उसे हम भूले ही कैसे? जो है उसे हमने खोया कैसे? जो है उसे खोया कैसे जा सकता है?

इसलिए पहली बात समझ लेनी जरूरी है, मन का नियम। मन उसी को जानता है जो नहीं है। तुम्हारे पास अगर दस हजार रुपए हैं तो उन दस हजार रुपयों को मन भूल जाता है। मन उन दस लाख रुपयों का चिंतन करता है जो होने चाहिए, पर हैं नहीं। मन अभाव का चिंतन करता है। जो पत्नी उपलब्ध है, मन उसे भूल जाता है। जो स्त्री उपलब्ध नहीं है, मन उसकी कल्पनाएं करता है, योजनाएं बनाता है। जो मिला है, मन उसे देखता ही नहीं। उसी पर नजर रखता है, जो मिला नहीं है। हाथ की असलियत मन को नहीं भाती, स्वप्न के आभास भाते हैं। मन स्वप्न के भोजन पर जीता है। मन जीता ही स्वप्न के सहारे है।

भीतर सपनों का जाल

जब भी आंख बंद करोगे, भीतर सपनों का जाल पाओगे। आंख खोले काम में भी लगे हो, तब भी भीतर उनका सिलसिला जारी रहता है। तब भी पर्त-दर-पर्त सपने घने होते रहते हैं। तुम देखो या न देखो, लेकिन मन सपने बुनता रहता है। मन का सपनों का ताना-बाना क्षण भर को रुकता नहीं। उसी सपने के जाल का नाम माया है। उसी सपने के जाल में उलझे तुम परेशान और पीड़ित हो। जो नहीं है उसने तुम्हें अटकाया है। जो नहीं है, उसने तुम्हें भरमाया है। जो नहीं है उसने तुम्हारी आंखें बंद कर दी हैं और जो है उसे देखना मुश्किल हो गया है।

मन में श्रद्धा नहीं

रात तुमने कितनी बार सपने देखे हैं और हर बार जागकर पाया, झूठे थे! लेकिन फिर जब रात आज देखोगे स्वप्न तो देखते समय सच मानोगे। झूठ को सच मानने की तुम्हारी कितनी प्रगाढ़ धारणा है! कितनी बार जागकर भी, कितनी बार देखकर भी कि सपने सुबह झूठ सिद्ध हो जाते हैं, फिर भी जब तुम रात स्वप्न देखोगे तो सच मालूम होगा। लोग कहते हैं, हमारे मन में श्रद्धा नहीं है। हम बड़े संवेदनशील हैं।

निस्तार कैसे होगा

हमारा निस्तार कैसे होगा? मैं कहता हूं, तुम सपनों तक पर श्रद्धा करते हो, सत्य की तो बात ही छोड़ो। तुम सपनों तक पर भरोसा करते हो, उन पर तक तुम्हें अभी सन्देह नहीं आया, तो तुम और किस पर सन्देह करोगे? जो नहीं है, उस पर भी सन्देह नहीं हो पाता, तो जो है उस पर तुम कैसे सन्देह करोगे? जिसने सपने तोड़े, उसके भीतर श्रद्धा का जन्म हुआ। जिसने सपने तोड़े, उसने तब सत्य को जानने का मार्ग साफ कर लिया।

बुद्धि नहीं हृदय की सुनिए

तुम्हारा हृदय ही कहेगा। हृदय हमेशा कह देता है, मगर तुम सुनते नहीं हो हृदय की। तुम कहते हो, कैसे गुरु को पहचानें? क्या कसौटी है? बुद्धि कसौटी मांगती है, हृदय तत्क्षण कह देता है, हृदय की सुनो, बुद्धि को एक तरफ रख दो।

हृदय से कभी भूल नहीं हुई है। हृदय ऐसे ही है, जैसे तुमने दिशासूचक-यंत्र, जो सदा बताता रहता है पूरब की ओर, सूरज उगने की ओर। हृदय सदा परमात्मा की तरफ इशारा करता है, मगर तुम हृदय नहीं बुद्धि की सुनते हो और बुद्धि की सुनने के कारण अक्सर भ्रांति में पड़ते हो। सच यह है कि जब तक बुद्धि की सुनते रहोगे, तब तक गुरु नहीं मिलेगा। जो मिलेंगे वे गुरु के धोखे होंगे। गुरु के धोखे बुद्धि को राजी कर लेंगे, क्योंकि गुरु के धोखे का मतलब होता है-जो तुम्हें राजी करने को ही बैठा है। तुम जैसा चाहते हो, वैसा बनकर बैठा है। सद्गुरु कभी भी तुम्हारी अभिलाषाओं, आकांक्षाओं, अपेक्षाओं के अनुकूल नहीं होता, हो ही नहीं सकता। नहीं तो जीसस को लोग सूली चढ़ाते? बुद्ध को पत्थर मारते? महावीर को गांव से खदेड़ कर निकालते? सुकरात को जहर पिलाते? यह मत सोचना कि वे सब लोग पागल थे। वे तुम्हारे ही जैसे लोग थे, तुम ही थे-जिन्होंने जीसस को सूली दी, सुकरात को जहर पिलाया, बुद्ध को पत्थर मारे, महावीर के कानों में सींखचे ठोक दिये। वे तुम से जरा भी भिन्न न थे। ऐसा नहीं है कि गुरुओं की पूजा उस दिन नहीं हो रही थी। जब बुद्ध को लोग पत्थर मार रहे थे, तब भी पंडित, पुजारी, पोंगापंथी पूजे जा रहे थे। जब जीसस को लोग सूली पर चढ़ा रहे थे, तब भी धर्मगुरु का सम्मान किया जा रहा था।

तुम्हारी बुद्धि जिससे राजी हो जाती है, वह अक्सर धोखा होता है। उसके पीछे कारण है, क्योंकि वह धोखे की पूरी तैयारी करता है। वह गुरु नहीं, गहरे अर्थ में सिर्फ राजनेता है। राजनेता की कला का सार यही है कि लोग जहां जाना चाहते हैं, वहां जल्दी से उचक कर उनके आगे हो जाता है।

लोग पूरब जा रहे हैं तो वह कहता है पूरब जाना है। लोग पश्चिम जाने लगें तो कहता है, मैं तो सदा कह रहा था कि पश्चिम जाना है और लोगों को समझ नहीं आ पाता कि वह हमारी नजरें परख रहा है, हमारे भाव परख रहा है, हवा का रुख परख रहा है। सद्गुरु तुम्हारे हिसाब से नहीं चल सकता,परमात्मा के हिसाब से चलता है। उसके साथ तो जिसे राजी होना हो, उसे ही राजी होना पड़ता है। वह तुम से राजी नहीं होता। समझ लेना, जो तुमसे राजी है, वह तुम्हें बदल नहीं पाएगा।

कई बार ऐसा होता है कि ध्यान में जाने और मंत्रों के उच्चारण के बाद भी मन अन्य बातों की ओर भागता है।

मानसिक ऊर्जा का स्रोत

जैसे किराने की दुकान खुली या नहीं? या आज खाना कौन बनाएगा? पर जब आप खुद के साथ समय बिताने की आदत डाल लेंगे तो मंत्र आपकी मानसिक शक्ति और ऊर्जा को बढ़ाएंगे और उच्च संस्कारों का निर्माण होगा। आपको अपने मन को इसके अनुकूल बैठाना होगा। अनचाही चीजों के बारे में सोचते रहना मन का स्वभाव होता है। जब भी हम चिंता करते हैं तो हमारा शरीर काफी सारी ऊर्जा खो बैठता है।

ऊर्जा मत खोओ

दो गलत तरह के मंत्रों का उपयोग करने से हम अपनी यह ऊर्जा खो बैठते हैं। पहला है आर्द, जिसका मतलब होता है बार-बार दु:खों को याद करते रहना। दूसरा है रौद्र, जिसका मतलब होता है गुस्से को आने देना। इनका परिणाम यह होता है कि शरीर बीमारियों का शिकार होने लगता है। अपने मन को आर्द और रौद्र से छुटकारा दिलाने के लिए अपनी आध्यात्मिक क्रिया जारी रखें, मंत्रों का उच्चारण करें और ध्यान में जाएं। महर्षि पातंजलि ने योगसूत्रों में कहा है- यदि स्तान संशय अतिरति प्रमाद आलस्य। बीमारी, उत्साह की कमी, शंका, चिंता आदि रुकावटों को दूर करने के लिए एक तत्व अभ्यास का प्रयोग करें। किसी भी एक मंत्र का उच्चारण करें, उस एक ध्वनि का, एक शब्दांश का लंबे समय तक अभ्यास करें।

मन का विचार

तो जब मन में विचार और मंत्र दोनों चल रहे हों, आपका मन और चैतन्य मंत्रों से भरा होना चाहिए। तब मन चिंताओं से मुक्त हो जाता है क्योंकि एक मंत्र में शक्ति के साथ-साथ एक खास स्पंदन भी होता है। जब उसका उच्चारण किया जाता है, तो वह ऊर्जा में बदल जाता है और आपके चैतन्य को भर देता है। जैसे-जैसे चैतन्य में यह ऊर्जा बढ़ती है, हम स्वयं के और करीब आ जाते हैं और हमारी हर चीज में- जैसे कि हमारे घर में, मन में शरीर और वातावरण में यह ऊर्जा और निश्चयात्मकता फैलती चली जाती है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

संक्षिप्त समाचार

ट्रंप का नया आदेश– कॉलेज खेलों में नियम कड़े

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कॉलेज खेलों को लेकर एक बड़ा आदेश जारी किया है। इसका मकसद खेलों में नियम, निष्पक्षता और स्थिरता लाना है। इस आदेश के तहत खिलाड़ियों के ट्रांसफर, योग्यता और पैसे से जुड़े नियमों को सख्ती से लागू किया जाएगा। अगर कोई यूनिवर्सिटी इन नियमों का उल्लंघन करती है, तो उसे सरकारी फंड और कॉन्ट्रैक्ट से वंचित किया जा सकता है। सरकार चाहती है कि खिलाड़ियों के लिए पांच साल की स्पष्ट भागीदारी सीमा तय हो, ट्रांसफर नियम व्यवस्थित हों और सभी खिलाड़ियों को बेहतर मेडिकल सुविधा मिले। साथ ही, महिलाओं और ओलंपिक खेलों को भी आर्थिक रूप से मजबूत करने पर जोर दिया गया है। पे-फॉर-प्ले जैसे गलत पैसों के लेन-देन पर रोक लगाने की बात भी कही गई है। इस आदेश में डेटा कलेक्शन बढ़ाने और नियम तोड़ने वालों पर सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए हैं। ट्रंप प्रशासन ने कांग्रेस से भी जल्द कानून बनाने की अपील की है।

स्कूल में बुलिंग से छात्रा की मौत, 12 साल का बच्चा गिरफ्तार

लॉस एंजिलिस, एजेंसी। अमेरिका के लॉस एंजिलिस में एक दुखद घटना सामने आई है, जहां 12 साल की एक छात्रा की मौत हो गई। पुलिस ने इस मामले में एक 12 साल के बच्चे को गिरफ्तार किया है। जानकारी के मुताबिक, छात्रा को स्कूल में बुलिंग के दौरान धातु की पानी की बोतल से सिर पर मारा गया था। पहले उसे अस्पताल से छुट्टी मिल गई थी, लेकिन बाद में हालत बिगड़ने पर उसे दोबारा भर्ती किया गया, जहां उसकी मौत हो गई। परिवार का आरोप है कि बच्ची और उसकी बहन को लंबे समय से स्कूल में परेशान किया जा रहा था, लेकिन स्कूल प्रशासन ने समय रहते कोई कार्रवाई नहीं की। अब परिवार स्कूल प्रशासन पर भी जिम्मेदारी तय करने की मांग कर रहा है। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच जारी है और आगे कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

कैलिफोर्निया में भीषण जंगल की आग, लोगों को निकाला गया

सैकरामेंटो, एजेंसी। अमेरिका के कैलिफोर्निया में तेजी से फैल रही जंगल की आग ने लोगों की चिंता बढ़ा दी है। तेज हवाओं के कारण आग बहुत तेजी से फैल रही है, जिससे कई इलाकों में लोगों को घर छोड़ने के आदेश दिए गए हैं। यह आग मोरेनो वैली इलाके के पास शुरू हुई और कुछ ही घंटों में बड़े क्षेत्र में फैल गई। प्रशासन ने लोगों को सुरक्षित जगहों पर जाने के लिए कहा है। मौसम विभाग ने चेतावनी दी है कि तेज हवाओं के चलते हालात और बिगड़ सकते हैं। पेड़ गिरने और बिजली कटने का भी खतरा बना हुआ है। दमकल विभाग आग पर काबू पाने की कोशिश कर रहा है, लेकिन हवा की वजह से मुश्किलें बढ़ रही हैं। लोगों से सतर्क रहने और प्रशासन के निर्देशों का पालन करने की अपील की गई है।

श्रीलंका सरकार ने सरकारी उद्यमों को बेचने का निर्णय वापस लिया

कोलंबो, एजेंसी। श्रीलंका सरकार ने सुप्रीम कोर्ट को सूचित किया है कि पिछली सरकार द्वारा सरकारी उद्यमों को बेचने का निर्णय वापस ले लिया है। अटॉर्नी जनरल परिंदा रणसिंघे जूनियर ने तीन सदस्यीय पीठ को बताया कि श्रीलंकन एयरलाइंस, टेलीकॉम, इंश्योरेंस और लंका हॉस्पिटल्स को अब नहीं बेचा जाएगा। यह स्पष्टीकरण पूर्व राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे के कैबिनेट फैसले को चुनौती देने वाली याचिका पर आया है। हालांकि, आईएमएफ की बेलआउट शर्तों के तहत घाटे को कम करने के लिए निजीकरण की बात कही गई थी।

चीन : कम्युनिस्ट पार्टी ने शिनजियांग के पूर्व प्रमुख के खिलाफ शुरू की जांच

बीजिंग, एजेंसी। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने शिनजियांग के पूर्व प्रमुख मा शिंगरुई के खिलाफ अनुशासन और कानून के उल्लंघन के संदेह में जांच शुरू की है। शिंगरुई 2021 से 2025 तक शिनजियांग के पार्टी सचिव रहे थे। उन पर लगे आरोपों का खुलासा नहीं हुआ है, लेकिन उन्हें इस साल हटा दिया गया था। शिनजियांग क्षेत्र उइगर मुसलमानों और अन्य अल्पसंख्यकों की नजरबंदी को लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चा में रहा है। रिपोर्टों के अनुसार, चीन ने वहां लाखों अल्पसंख्यकों को हिरासत में लिया था।

सूडान : अस्पताल पर ड्रोन हमले में 10 की मौत, 19 लोग घायल

खार्तूम, एजेंसी। सूडान के अर्धसैनिक बलों द्वारा देश के दक्षिण-मध्य भाग में एक अस्पताल पर ड्रोन हमले में 10 लोगों की मौत हो गई। स्वास्थ्य समूह (डॉक्टर्स विदाउट बॉर्डर्स) ने बताया कि सूडानी अर्धसैनिक बल रैपिड सपोर्ट फोर्सेज ने व्हाइट नाइल प्रांत के अल-जबलैन अस्पताल पर ड्रोन से दो हमले किए। इस हमले में एक ऑपरेशन थिएटर और एक प्रसूति वार्ड को निशाना बनाया गया।

उत्तरी अफगानिस्तान में 5.9 तीव्रता के भूकंप से आठ लोगों की मौत

काबुल, एजेंसी। अफगानिस्तान में 5.9 तीव्रता के भूकंप के झटके महसूस हुए। अफगानिस्तान नेशनल डिजास्टर मैनेजमेंट अथॉरिटी के प्रवक्ता मोहम्मद यूसुफ हम्माद ने बताया कि उत्तरी अफगानिस्तान में आए इस भूकंप में कम से कम आठ लोगों की मौत हो गई है। हम्माद ने शुक्रवार देर रात बताया कि भूकंप के बाद काबुल प्रांत में एक घर गिर गया, जिसमें आठ लोगों की मौत हो गई और एक बच्चा घायल हो गया। राजधानी काबुल में भी तेज झटके महसूस किए गए। न्यूज एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, भूकंप का केंद्र शुरू में 36.55 डिग्री उत्तरी अक्षांश और 70.85 डिग्री पूर्वी देशांतर पर पाया गया। इसके अलावा भूकंप की गहराई 186.4 किलोमीटर थी।

शुक्रवार रात दिल्ली-एनसीआर और उत्तर भारत के कई हिस्सों में भूकंप के झटके महसूस किए गए, जिससे लोगों में घबराहट फैल गई और वे घरों और ऑफिस की बिल्डिंग से बाहर निकल आए। दिल्ली, नोएडा, गुरुग्राम, गाजियाबाद और फरीदाबाद के साथ-साथ उत्तर प्रदेश, हरियाणा और आस-पास के इलाकों सहित कई जगहों से भूकंप के झटके महसूस किए गए।

लोगों ने बताया कि बैठे-बैठे उन्हें अचानक झटके महसूस हुए, जिससे फर्नीचर और घर में रखी हुई या लटकी अन्य चीजें हिलने लगीं। कई लोगों ने कहा कि झटके कुछ सेकंड तक रहे लेकिन इतने तेज थे कि घर के अंदर भी साफ महसूस किए जा सकते थे।

कई रिहायशी इलाकों में, लोग सावधानी के तौर पर अपने घरों से बाहर निकल गए, जबकि ऑफिस में मौजूद लोग कुछ देर के लिए बिल्डिंग से बाहर निकल आए। अफगानिस्तान में कई तरह की प्राकृतिक आपदाएं आती हैं, लेकिन यहां भूकंप से सबसे ज्यादा मौतें होती हैं। हर साल औसतन लगभग 560 लोग मारे जाते हैं और सालाना लगभग 80 मिलियन डॉलर का नुकसान होता है। अध्ययनों से पता चलता है कि 1990 से अब तक अफगानिस्तान में 5.0 से ज्यादा तीव्रता वाले कम से कम 355 भूकंप आए हैं। अफगानिस्तान यूरेशियन टेक्टोनिक प्लेट के किनारे पर है, जो इंडियन प्लेट के साथ एक ट्रांसग्रेशन जोन शेयर करता है। इसका मतलब है कि दोनों एक-दूसरे से मिल सकते हैं या एक-दूसरे को छू सकते हैं, और यह अपने दक्षिण में अरेबियन प्लेट से भी प्रभावित है, जिससे यह दुनिया के सबसे ज्यादा टेक्टोनिक रूप से सक्रिय इलाकों में से एक बन गया है। इंडियन प्लेट का उत्तर की ओर बढ़ना और यूरेशियन प्लेट से उसका टकराना आमतौर पर अफगानिस्तान में कई भूकंपों के लिए जिम्मेदार होता है। पूर्वी और उत्तर-पूर्वी अफगानिस्तान, खासकर उज्बेकिस्तान, ताजिकिस्तान और पाकिस्तान के साथ इसकी सीमाओं वाले इलाके, भूकंप के लिए खास तौर पर संवेदनशील हैं। इसमें बहुत ज्यादा आबादी वाला काबुल भी शामिल है, जहां अध्ययन के मुताबिक, भूकंप से हर साल सबसे ज्यादा औसत अनुमानित नुकसान होता है, जो 17 मिलियन डॉलर है। अफगानिस्तान के पहाड़ों में भूकंप खास तौर पर खतरनाक होते हैं। यहां वे लैंडस्लाइड को ट्रिगर कर सकते हैं, जिससे जान-माल का नुकसान बढ़ जाता है।

ईरान की धमकी: बाब अल-मंदेब जलडमरूमध्य को निशाना बनाने का संकेत

तेहरान, एजेंसी। ईरान ने एक बार फिर अंतरराष्ट्रीय शिपिंग के लिए महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों पर दबाव बढ़ाने की ओर इशारा किया है। ईरानी संसद के अध्यक्ष मोहम्मद बाकेर गालिबाफ ने कहा कि तेहरान अपने विरोधियों पर दबाव बढ़ाने के लिए बाब अल-मंदेब जलडमरूमध्य को भी निशाना बना सकता है। यह बयान ऐसे समय में आया है, जब होर्मुज जलडमरूमध्य पर जारी समुद्री नाकाबंदी अंतरराष्ट्रीय शिपिंग पर गहरा आर्थिक और लॉजिस्टिक दबाव बना रही है।

गालिबाफ ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर कई सवाल पोस्ट करते हुए वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं की कमजोरियों को उजागर किया। उन्होंने इस जलमार्ग पर दुनिया की निर्भरता पर सवाल उठाया। उन्होंने कहा कि वैश्विक तेल, एलएनजी, गेहूं, चावल और उर्वरक शिपमेंट का कितना हिस्सा बाब अल-मंदेब जलडमरूमध्य से होकर गुजरता है?

गालिबाफ का इशारा बढ़ा रहा दुनिया की चिंता : ईरानी संसद के अध्यक्ष ने आगे कहा कि कुछ देश और कंपनियां इस रणनीतिक कदम से विशेष रूप से प्रभावित हो सकती हैं। उन्होंने पूछा, 'किन देशों और कंपनियों का इस जलडमरूमध्य से गुजरने वाले शिपमेंट में सबसे अधिक हिस्सा है?' इससे यह संकेत मिलता है कि इस्लामिक गणराज्य अपने प्रभाव को अधिकतम करने के तरीकों का मूल्यांकन कर रहा है।

ईरान के जवाबी हमलों में नहीं आई कमी : यह समुद्री रणनीति युद्ध के मैदान पर बढ़ते तनाव के साथ मेल खाती है। ईरान और उसके सहयोगियों ने एक सतत जवाबी अभियान ऑपरेशन ट्रू प्रॉमिस 4 के तहत हमलों क नई लहर शुरू कर दी है, जिसने कब्जे वाले क्षेत्रों के भीतर महत्वपूर्ण इस्राइली सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया है। यह हमले हाल की शत्रुतापूर्ण कार्रवाइयों की सीधी प्रतिक्रिया माने जा रहे हैं, जो क्षेत्रीय संघर्ष में एक महत्वपूर्ण वृद्धि का संकेत देते हैं।

ऊर्जा सुविधाओं और नागरिक बुनियादी ढांचे को निशाना बनाने का आरोप : ईरान का कहना है कि यह जवाबी कार्रवाई उन हमलों का भी जवाब है, जिनमें ईरान की ऊर्जा सुविधाओं और नागरिक बुनियादी ढांचे को जानबूझकर निशाना बनाया गया। प्रेस टीवी ने बताया कि विरोधी ताकतों की पिछली कार्रवाइयों के कारण सैकड़ों ईरानी नागरिकों की मौत हुई थी, जिनमें मिनाब में एक प्राथमिक विद्यालय में लगभग 170 बच्चे शामिल थे।

वॉशिंगटन डीसी मेयर चुनाव: पहली दक्षिण एशियाई उम्मीदवार बनीं भारतीय मूल की रिनी संपत, रचा नया इतिहास

वॉशिंगटन डीसी, एजेंसी। अमेरिका की राजनीति में भारतीय मूल के लोगों की भागीदारी लगातार बढ़ रही है। इसी कड़ी में रिनी संपत ने इतिहास रचते हुए वॉशिंगटन डीसी मेयर चुनाव के बैलेट में जगह बना ली है। वह इस पद के लिए बैलेट तक पहुंचने वाली पहली दक्षिण एशियाई उम्मीदवार बन गई हैं। तमिलनाडु के थेनी में जन्मी रिनी संपत बचपन में ही अमेरिका चली गई थीं। उन्होंने बताया कि यह उपलब्धि सिर्फ उनके लिए नहीं, बल्कि पूरे दक्षिण एशियाई समुदाय के लिए गर्व का पल है। रिनी ने कहा कि वह सात साल की उम्र में अमेरिकन ड्रीम को पूरा करने के लिए अमेरिका आई थीं।

अब उनका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि यह सपना वॉशिंगटन डीसी के हर नागरिक के लिए हकीकत बने। उनके अभियान के मुताबिक, 4,500 से ज्यादा लोगों ने उनके समर्थन में हस्ताक्षर किए, जिसके बाद उन्हें आधिकारिक तौर पर बैलेट में जगह मिली। 31 वर्षीय रिनी संपत पिछले एक दशक से वॉशिंगटन डीसी में रह रही हैं और एक सरकारी ठेकेदार के रूप में काम कर चुकी हैं। उनका चुनावी एजेंडा शहर की बुनियादी समस्याओं को सुधारने पर केंद्रित है। उन्होंने कहा कि अगर वह मेयर बनती हैं, तो सड़कों की मरम्मत, सीवर और जल निकासी समस्याओं का समाधान, 911 सेवाओं में सुधार और महंगाई को कम करना उनकी प्राथमिकता होगी। रिनी संपत ने मौजूदा प्रशासन पर भी सवाल उठाए हैं।

उनका कहना है कि शहर की बुनियादी सेवाएं लगातार कमजोर हो रही हैं। उन्होंने हाल की बर्फबारी का जिक्र करते हुए कहा कि सड़कों और फुटपाथों की हालत खराब हो गई थी और कचरा प्रबंधन भी बिगड़ गया था। उन्होंने खुद को एक आउटसाइडर उम्मीदवार बताते हुए कहा कि वह पारंपरिक राजनीति से अलग हैं और किसी बड़े राजनीतिक समूह का समर्थन उन्हें नहीं मिला है। उनका मानना है कि शहर को नई सोच और जमीनी स्तर पर काम करने वाले नेतृत्व की जरूरत है। रिनी ने अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवार, खासकर अपने दादा और पिता को दिया। उन्होंने कहा कि भारत से मिले संस्कार और परिवार की प्रेरणा ही उन्हें सार्वजनिक सेवा के लिए आगे बढ़ने की ताकत देती है।

अमेरिकी बजट प्रस्ताव में आया बड़ा बदलाव, घरेलू खर्च में की कटौती और रक्षा खर्च में ऐतिहासिक बढ़ोतरी

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के प्रस्तावित वित्तीय वर्ष 2027 के बजट में घरेलू कार्यक्रमों में बड़ी कटौती देखने को मिल रहा है। प्रस्तावित बजट में फेडरल एजेंसियों के व्यापक पुनर्गठन की रूपरेखा दी गई है, जबकि सुरक्षा, कानून-व्यवस्था जैसी प्रमुख प्राथमिकताओं के लिए फंडिंग बरकरार रखी गई है। बजट में 2026 के गैर-रक्षा स्तरों की तुलना में 10 फीसदी कटौती का प्रस्ताव रखा गया है। इसका उद्देश्य खर्च पर नियंत्रण और फेडरल सरकार के ढांचे में बदलाव करना है। इस योजना को 'फिजूल और अप्रभावी कार्यक्रमों' से हटकर बताया गया है, जबकि सीमा सुरक्षा, पुलिसिंग और वेटरन्स सेवाओं जैसे क्षेत्रों को प्राथमिकता दी गई है।

विभिन्न विभागों में बड़े पैमाने पर कटौती का खाका पेश किया गया है। कृषि विभाग को 20.8 अरब डॉलर की फंडिंग देने का प्रस्ताव है, जो 19 फीसदी की कमी को दर्शाता है। वाणिज्य विभाग का बजट 9.2 बिलियन डॉलर रखा गया है, जो 12.2 फीसदी कम है, जबकि शिक्षा विभाग को 76.5 बिलियन डॉलर मिलेंगे और इसे खत्म होने की राह पर बताया गया है। स्वास्थ्य और मानवीय सेवाओं की फंडिंग घटकर 111.1 बिलियन डॉलर हो जाएगी, जो 12.5 फीसदी की कमी को दर्शाता है, जबकि हाउसिंग और शहरी विकास में 13 फीसदी की कटौती होकर 73.5 बिलियन डॉलर हो जाएगी। राज्य विभाग और अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों को सबसे ज्यादा कटौती का सामना करना पड़ रहा है। प्रस्तावित बजट के तहत 35.6 बिलियन डॉलर की फंडिंग की बात कही गई है, जो पिछले साल से 30 फीसदी कम है। बजट में, दूसरी चीजों के अलावा, शिक्षा ग्रांट, हाउसिंग इनिशिएटिव और विदेशी सहायता योजना सहित कई एजेंसियों के कई कार्यक्रमों को खत्म करने या एक साथ करने की बात कही गई है। स्वास्थ्य क्षेत्र में इस योजना के तहत स्वास्थ्य एवं मानव सेवा विभाग के पुनर्गठन का प्रस्ताव है, ताकि 'एडमिनिस्ट्रेशन फॉर अ हेल्दी अमेरिका' के तहत पोषण, खाद्य सुरक्षा और दीर्घकालिक बीमारियों की रोकथाम को प्राथमिकता दी जा सके। गृह सुरक्षा विभाग का बजट घटाकर 63 बिलियन डॉलर कर दिया जाएगा, जबकि बॉर्डर एनफोर्समेंट और इमिग्रेशन कंट्रोल में निवेश बरकरार रहेगा। इसी तरह, न्याय विभाग को लॉ एनफोर्समेंट के लिए ज्यादा फंडिंग मिलेगी, जबकि गैर-जरूरी समझे जाने वाले ग्रांट प्रोग्राम को कम या खत्म कर दिया जाएगा।

बजट में फेडरल ब्यूरोक्रेसी को कम करने और शिक्षा, हाउसिंग और वर्कफोर्स डेवलपमेंट जैसे क्षेत्र में राज्यों और लोकल सरकारों पर जिम्मेदारियां डालने पर जोर दिया गया है।

नाटो प्रमुख मार्क रुट्टे अगले सप्ताह वाशिंगटन में डोनाल्ड ट्रंप से करेंगे मुलाकात

वाशिंगटन, एजेंसी। उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के महासचिव मार्क रुट्टे 8 से 12 अप्रैल तक वाशिंगटन डीसी की यात्रा पर रहेंगे, जहां वे अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों से मुलाकात करेंगे। यह जानकारी नाटो के प्रवक्ता द्वारा जारी एक बयान में दी गई है। प्रवक्ता ने बताया कि 8 अप्रैल को रुट्टे, ट्रंप, अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो और रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ के साथ बातचीत करेंगे। इस यात्रा में 9 अप्रैल को एक सार्वजनिक कार्यक्रम भी शामिल है, जिसमें रुट्टे द्वारा रोनाल्ड रीगन प्रेसिडेंशियल फाउंडेशन एंड इंस्टीट्यूट द्वारा आयोजित एक चर्चा में भाषण देने और भाग लेने की उम्मीद है।

यह यात्रा ट्रांस अटलांटिक गठबंधन के लिए एक महत्वपूर्ण समय पर हो रही है, क्योंकि ईरान से जुड़े संघर्ष के बीच ट्रंप की हालिया आलोचना के बाद तनाव बढ़ गया है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने यूरोपीय सहयोगियों के प्रति कड़ी असंतोष व्यक्त करते हुए नाटो पर अमेरिकी रणनीतिक उद्देश्यों का समर्थन करने के लिए पर्याप्त कदम न उठाने का आरोप लगाया है। ट्रंप ने तो यहां तक संकेत दिया है कि संयुक्त राज्य अमेरिका 77 साल पुराने गठबंधन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता पर पुनर्विचार कर सकता है, जिससे नाटो के भविष्य को लेकर सदस्य देशों में चिंताएं बढ़ गई हैं। उन्होंने यूरोप में सैन्य ठिकानों तक अमेरिकी सैन्य पहुंच को प्रतिबंधित करने और होर्मुज स्ट्रेट जैसे महत्वपूर्ण वैश्विक मार्गों की सुरक्षा में नेतृत्व करने में रुचि नहीं दिखाने के लिए सहयोगी देशों की आलोचना की है। नाटो अधिकारियों ने पुष्टि की है कि 8 अप्रैल को रुट्टे और ट्रंप के बीच होने वाली आगामी बैठक पर बारीकी से नजर रखी जाएगी, क्योंकि यह भू-राजनीतिक अनिश्चितता के दौर में गठबंधन की दिशा तय कर सकती है। ट्रंप के सत्ता में लौटने के बाद से कई संकटों के दौरान अमेरिकी नेता के साथ रचनात्मक संबंध बनाए रखने की उनकी क्षमता के कारण, नीदरलैंड के पूर्व प्रधानमंत्री रुट्टे को पर्यवेक्षकों द्वारा 'ट्रंप का सलाहकार' बताया गया है। उन्होंने लगातार तर्क दिया है कि ट्रंप के दबाव ने यूरोपीय देशों को रक्षा खर्च बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है, जिससे अंततः नाटो की क्षमताएं मजबूत हुई हैं। वाशिंगटन में होने वाली चर्चाओं में तेजी से अस्थिर होते वैश्विक वातावरण में गठबंधन की एकता, रक्षा प्रतिबद्धताओं और रणनीतिक समन्वय पर ध्यान केंद्रित किए जाने की उम्मीद है।

एपस्टीन मामले में बड़ा समझौता: 7.25 करोड़ डॉलर का बनाया गया फंड

वॉशिंगटन, एजेंसी। दुनिया को झकझोर देने वाले जेफरी एपस्टीन यौन शोषण मामले में नया मोड़ आया है। बैंक ऑफ अमेरिका और पीड़ितों के बीच 7.25 करोड़ डॉलर का समझौता हुआ है, जिससे 60-75 महिलाओं को मुआवजा मिल सकता है। अदालत ने इसे प्रारंभिक मंजूरी दी है और साफ किया है कि हर पीड़ित तक इसकी जानकारी पहुंचनी चाहिए, ताकि कोई भी न्याय से वंचित न रहे।

दुनियाभर में कुख्यात वित्त कारोबारी और दोषी यौन अपराधी जेफरी एपस्टीन का घिनौना मामला लगातार सुर्खियों में बना हुआ है। नए-नए खुलासों और दस्तावेजों ने दुनियाभर के कई बड़े नेताओं और अरबपतियों की नींद उड़ा दी है। इसी बीच इस मामले में बैंक ऑफ अमेरिका और पीड़ित महिलाओं के वकीलों के बीच हुए समझौते के तहत 7.25 करोड़ डॉलर (करीब 600 करोड़ रुपये) का एक फंड बनाया गया है, जिससे पीड़ित महिलाओं को मुआवजा दिया जाएगा। अदालत के अनुसार, इस फंड का फायदा 60 से 75 महिलाओं को मिल सकता है, जिनका एपस्टीन ने 2008 के बाद यौन शोषण किया था। अमेरिकी जिला जज जेड एस. रैकॉफ ने इस समझौते को शुरुआती मंजूरी दे दी है और अंतिम सुनवाई 27 अगस्त को होगी। उन्होंने यह भी कहा कि सभी पीड़ितों तक इस फंड की जानकारी पहुंचनी चाहिए, ताकि कोई भी छूट न जाए। मामले में पीड़ित महिलाओं के वकीलों का आरोप था कि बैंक ऑफ अमेरिका ने एपस्टीन के संदिग्ध लेनदेन को नजरअंदाज किया, जबकि वह 2008 से 2019 के बीच लड़कियों और महिलाओं का शोषण कर रहा था।हालांकि बैंक ने आरोपों के बाद भी अपने बयान में कहा कि वह अपने पुराने रुख पर कायम है कि उसने किसी भी तरह के अपराध में मदद नहीं की, लेकिन इस समझौते से मामला खत्म होगा और पीड़ितों को कुछ राहत मिलेगी। जेफरी एपस्टीन को जुलाई 2019 में अवैध देह व्यापार के आरोप में गिरफ्तार किया गया था, लेकिन अगस्त 2019 में न्यूयॉर्क की जेल में उसकी मौत हो गई, जिसे आत्महत्या बताया गया। इसके बाद से इस मामले में लगातार नए-नए मोड़ सामने आ रहे है, जिसने दुनियाभर के कई दिग्गजों की रातों की नींद उड़ा दी है।

ईरान का इस्लामाबाद में बैठक से साफ इनकार, नहीं हो पाया युद्धविराम

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान द्वारा अमेरिका और ईरान के बीच युद्धविराम कराने के प्रयास पूरी तरह विफल हो गए हैं। वॉल स्ट्रीट जर्नल ने शुक्रवार को मध्यस्थों का हवाला देते हुए यह जानकारी दी। ईरान ने पाकिस्तान सहित मध्यस्थता करा रहे देशों को स्पष्ट संदेश दिया है कि वह आने वाले दिनों में इस्लामाबाद में अमेरिकी अधिकारियों से मुलाकात करने को तैयार नहीं है और अमेरिका की मांगों को पूरी तरह अस्वीकार्य मानता है। कुल मिलाकर ये बातचीत अब 'डेड एंड' पर पहुंच गई है।

ईरान का इनकार और अमेरिका की मांगें सूत्रों के अनुसार, ईरान ने युद्धविराम के लिए अपनी शर्तें दोहराई हैं। शुरुआती दौर में ईरान ने कहा था कि वह तभी युद्ध समाप्त करेगा जब अमेरिका युद्ध मुआवजा दे, मध्य पूर्व के अपने सभी सैन्य ठिकानों से वापसी करे और भविष्य में किसी भी हमले से सुरक्षा की गारंटी दे। इन मांगों पर कोई समझौता नहीं होने के कारण बातचीत अटक गई है। रिपोर्ट के अनुसार, पाकिस्तान के नेतृत्व में बातचीत को आगे बढ़ाने की यह कोशिश कोई सफलता हासिल नहीं कर सकी। ईरान ने स्पष्ट किया है कि उसे अमेरिका की मांगें 'अस्वीकार्य' लगती हैं। वह पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद में अमेरिकी अधिकारियों के साथ बैठक के लिए अपने कोई अधिकारी को नहीं भेजेगा। इस कड़े रुख ने बातचीत की मौजूदा रूपरेखा के दरवाजे प्रभावी रूप से बंद कर दिए हैं।

पाकिस्तान की निकल गई हवा : पिछले कुछ हफ्तों से पाकिस्तान बैकडोर कूटनीति के जरिए अमेरिका और ईरान के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाने की कोशिश कर रहा था। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और विदेश मंत्री इशाक डार ने सार्वजनिक तौर पर इस्लामाबाद में सार्थक और निर्णायक वार्ता की मेजबानी करने की पेशकश की थी। इसी दिशा में पाकिस्तान ने

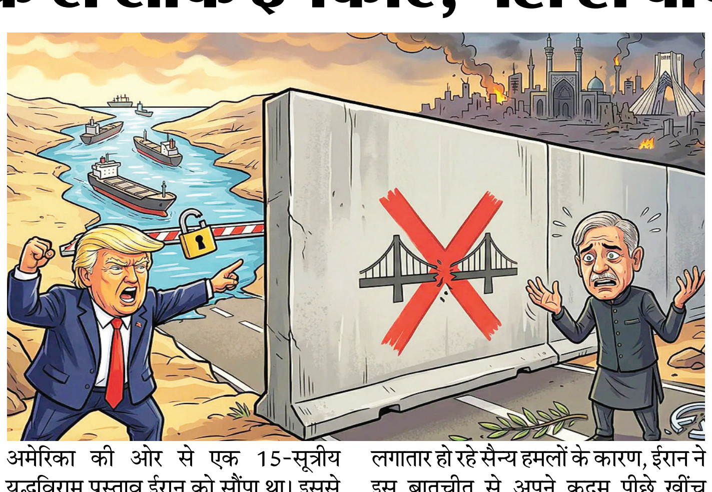

अमेरिका की ओर से एक 15-सूत्रीय युद्धविराम प्रस्ताव ईरान को सौंपा था। इससे पहले, चीन और पाकिस्तान ने भी संयुक्त रूप से एक 5-सूत्रीय शांति योजना पेश की थी। हालांकि, अमेरिका की कुछ कठोर रणनीतिक मांगों और जमीनी स्तर पर लगातार हो रहे सैन्य हमलों के कारण, ईरान ने इस बातचीत से अपने कदम पीछे खींच लिए। अंतरराष्ट्रीय मामलों के जानकारों का मानना है कि अमेरिका और ईरान के बीच अविश्वास की खाई इतनी गहरी है कि पाकिस्तान के लिए दोनों पक्षों को एक मेज पर लाना कूटनीतिक रूप से एक बेहद जटिल काम था, जो अंततः विफल साबित हुआ। शांति प्रयासों को सबसे बड़ा झटका तब लगा जब ईरान ने अपने हवाई क्षेत्र में एक अमेरिकी युद्धक विमान (स्न-15श्व) को मार गिराने का दावा किया। पश्चिमी मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, अमेरिकी विशेष बलों ने एक पायलट का सफलतापूर्वक रेस्क्यू कर लिया है, जबकि दूसरे की तलाश के लिए बड़े पैमाने पर रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया जा रहा है।

तुर्की और मिस्र तलाश रहे नए विकल्प इस कूटनीतिक गतिरोध के कारण शांति प्रयास अधर में लटक गए हैं। इसे देखते हुए तुर्की और मिस्र अब इस समस्या का समाधान इस्लामाबाद से बाहर तलाश रहे हैं। दोनों देश युद्धविराम की बची-खुची उम्मीदों को बचाने के लिए नए स्थानों पर विचार कर रहे हैं, जिनमें दोहा (कतर) और इस्तांबुल (तुर्की) बातचीत की मेजबानी के लिए प्रमुख विकल्पों के रूप में उभरे हैं।

क्यूबा में कैदियों की रिहाई, लेकिन उठे सवाल

हवाना, एजेंसी। क्यूबा सरकार ने करीब 2,000 कैदियों को रिहा करने का फैसला किया है, जिसे मानवीय कदम बताया जा रहा है। रिहाई के बाद कई परिवारों में खुशी का माहौल है। लोग अपने परिजनों से वर्षों बाद मिलकर भावुक हो गए। हालांकि, मानवाधिकार संगठनों ने इस फैसले पर सवाल उठाए हैं। उनका कहना है कि यह साफ नहीं है कि रिहा किए गए लोगों में कितने राजनीतिक कैदी शामिल हैं। कई संगठनों का आरोप है कि क्यूबा सरकार असली मुद्दे को छिपा रही है और राजनीतिक कैदियों को लेकर पारदर्शिता नहीं दिखा रही।

स्वामी, मुद्रक व् प्रकाशकः सुरेश मौर्या द्वारा अष्ठ विनायक ओफ़्सेट एफपी, 149 प्लोट 26 खोडीयारनगर, सिद्धिविनायक मंदीर के पास, भाटेना) हो.सो अंजना सुरत गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक : सुरेश मौया (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/75100 (Subject to Surat jurisdiction)

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

स्वदेशी 1000 किलो के हवाई बम खरीदेगी वायुसेना.......अमेरिका के एमके-84 बम जितना ताकतवार

अमेरिका-ईरान युद्ध और ऑपरेशन सिंदूर से मिला बड़ा सबक

नई दिल्ली ।

भारत ने अमेरिका-ईरान युद्ध और ऑपरेशन सिंदूर से बहुत बड़ी सीख ली है। इन दोनों घटनाओं ने दिखाया कि लड़ाई के समय हथियारों की मौजूदगी और उनकी ताकत कितनी जरूरी होती है। इसी वजह से रक्षा मंत्रालय ने अब वायु सेना को और मजबूत करने का फैसला किया है।

रक्षा मंत्रालय स्वदेशी 1000 किलो के हवाई बम खरीदने की तैयारी में जुट गया है। ये बम अमेरिका के एमके-84 बम जैसा ही होगा, जो 2000 पाउंड यानी करीब 907 किलो विस्फोटक ले जा सकते हैं। इसका मतलब है कि ये बम दुश्मन के बड़े-बड़े टारगेट को पूरी तरह बर्बाद कर सकते है। अब भारत खुद इन बमों को बनाएगा ताकि विदेश से खरीदने की जरूरत कम हो जाए और वायु सेना हमेशा तैयार रहे।

रक्षा मंत्रालय ने इन स्वदेशी बमों की खरीद के लिए एक्सप्रेशन ऑफ इंटरेस्ट यानी ईओसी जारी किया है। इसके तहत 600 इसतरह के 1000 किलो के हवाई बम बनाए और खरीदे जाएंगे। इनके साथ टेल यूनिट यानी पूंछ वाला हिस्सा और दूसरे जरूरी उपकरण भी शामिल रहने वाले है। यह पूरा प्रोजेक्ट बाय इंडियन कैटेगरी में चलेगा यानी सब कुछ भारत में ही तैयार होगा। इससे भारतीय कंपनियां आगे बढ़ेंगी और देश की रक्षा व्यवस्था मजबूत होगी।

ये नए हवाई बम खुद-ब-खुद टुकड़ों में बंटकर फैल जाएंगे। ये उच्च कैलिबर के हथियार हैं जो बहुत तेज विस्फोट पैदा करते हैं। दुश्मन के टारगेट पर भारी प्रभाव डालते हैं। ये बम रूसी और पश्चिमी दोनों तरह के विमानों पर लगाए जा सकते हैं, जो कि वायु सेना के पास हैं।

अभी तक वायु सेना इसतहर के एमके-84 क्लास के बम विदेशी कंपनियों से खरीदती थी। अब स्वदेशी बम आने से वायु सेना को ज्यादा विश्वास होगा और लॉजिस्टिक्स आसान होगा। ये बम दुश्मन के बड़े ठिकानों, पुलों, रनवे या गोदामों को एक झटके में नष्ट कर सकते हैं।

बात दें कि इस प्रोजेक्ट को दो चरणों में पूरा किया जाएगा। पहले चरण में छह प्रोटोटाइप बनाए जाएंगे, जिसमें लाइव वाले और इनर्ट यानी बिना विस्फोटक वाले दोनों तरह के बम शामिल रहने वाले है। इनके साथ टेल यूनिट और दूसरे उपकरण भी विकसित किए जाएंगे। इस चरण में सिंगल स्टेज कंपोजिट ट्रायल्स होगा और उसके बाद एयर स्टाफ क्वालिटेटिव रिक्वायरमेंट्स यानी एएसक्यूआर की जांच की जाएगी।

पहले चरण में करीब 50 प्रतिशत स्वदेशी सामग्री का इस्तेमाल जरूरी है।

दूसरे चरण में योग्य कंपनियों को कमर्शियल रिक्वेस्ट फॉर प्रपोजल यानी आरएफपी जारी किया जाएगा और कुल 600 बम खरीदे जाएंगे। यह खरीद बाय इंडियन-आईडीडीएम कैटेगरी में होगी जो डीएपी 2020 के हिसाब से सबसे ज्यादा स्वदेशी वाला रास्ता है। प्रोजेक्ट को पूरा होने में करीब ढाई साल का समय लगेगा। ईओआई जारी होने से लेकर कॉन्ट्रैक्ट साइन होने तक यह समय लगेगा। इसमें प्रोटोटाइप बनाना, यूजर ट्रायल्स करना, मूल्यांकन, कॉमर्शियल प्रोसे और अंत में कॉन्ट्रैक्ट फाइनल करना शामिल है।

बात दें कि वायु सेना प्रोजेक्ट को तेजी से आगे बढ़ा रही है, ताकि स्वदेशी विकास हो सके। आगे चलकर बड़े स्तर पर उत्पादन हो सके। ट्रायल्स भारत में ही आईएएफ यूनिट्स या तय जगहों पर होगा और तय आईएएफ विमान पर ही इनकी टेस्टिंग की जाएगी। इससे लॉजिस्टिक एंड्योरेंस यानी लंबे समय तक हथियारों की सप्लाई आसान होगी।

इंडो-पैसिफिक में 20 दिन चला सी ड्रैगन अभ्यास, भारत-अमेरिका समेत 5 देशों ने किया प्रदर्शन

नई दिल्ली ।

इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा को पुख्ता करने और पनडुब्बी रोधी युद्ध कौशल को धार देने के उद्देश्य से भारत और अमेरिका ने अपने सहयोगी देशों के साथ मिलकर 20 दिनों तक चलने वाला एक्सरसाइज सी ड्रैगन 2026 सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है। गुआम स्थित एंडरसन वायु सेना बेस पर 28 मार्च को समाप्त हुए इस बहुपक्षीय अभ्यास में भारत और अमेरिका के अलावा जापान, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड की सेनाओं ने भी अपनी ताकत का प्रदर्शन किया। इस अभ्यास का मुख्य केंद्र बिंदु समुद्र की गहराइयों में छिपे संभावित खतरों की पहचान करना और उन्हें प्रभावी ढंग से निष्क्रिय करने की संयुक्त क्षमता को विकसित करना था। कमांडर टास्क फोर्स 72 की मेजबानी में आयोजित इस युद्धाभ्यास ने जटिल समुद्री परिस्थितियों में मित्र देशों के बीच आपसी तालमेल को

एक नए स्तर पर पहुँचाया है।

अभ्यास के दौरान तकनीकी कौशल और आधुनिक सैन्य उपकरणों का बेहतरीन समन्वय देखने को मिला। इसमें अमेरिकी नौसेना के अत्याधुनिक पी-8ए पोसाइडन विमानों के साथ भारतीय नौसेना, जापान मैरीटाइम सेल्फ-डिफेंस फोर्स, रॉयल ऑस्ट्रेलियन एयर फोर्स और रॉयल न्यूजीलैंड एयर फोर्स के टोही विमानों ने हिस्सा लिया। युद्धाभ्यास को वास्तविक युद्ध जैसी परिस्थितियों के करीब ले जाने के लिए एमके-30 नामक मोबाइल एंटी-सबमरीन ट्रेनिंग टारगेट का उपयोग किया गया, जिसके जरिए ट्रैकिंग ड्रिल और लाइव पनडुब्बी खोजी अभियान चलाए गए। साइपन के निकटवर्ती समुद्री क्षेत्रों में हुए इस अभ्यास में रिकवर किए जा सकने वाले एक्सरसाइज टॉरपीडो का भी इस्तेमाल किया गया, जिससे सभी प्रतिभागी देशों की ऑपरेशनल क्षमता का विस्तार हुआ।

इस युद्धाभ्यास का एक दिलचस्प पहलू इसकी प्रतिस्पर्धात्मक प्रकृति रही, जिसमें विभिन्न देशों के प्रदर्शन का वास्तविक डेटा के आधार पर मूल्यांकन किया गया।

हमें पैसे नहीं चाहिए, सच्चाई जाननी है, ब्लैक बॉक्स रिकॉर्डर डेटा सार्वजनिक किया जाए

अहमदाबाद विमान हादसे के पीड़ित परिवारों ने पीएम मोदी को पत्र लिखकर की मांग

नई दिल्ली ।

अहमदाबाद में एअर इंडिया विमान हादसे के 10 महीने बाद करीब 30 पीड़ित परिवारों ने शनिवार को पीएम मोदी को पत्र लिखा है। उन्होंने मोदी से फ्लाइट का ब्लैक बॉक्स और कॉकपिट वॉयस रिकॉर्डर डेटा सार्वजनिक करने की मांग की है। परिजनों ने कहा कि हमें पैसे नहीं चाहिए। हमें सच्चाई जाननी है। हम जानना चाहते हैं कि हादसा क्यों हुआ और क्या इसमें कोई तकनीकी खराबी थी। परिजनों का कहना है कि अगर ब्लैक बॉक्स डेटा सार्वजनिक नहीं किया जा सकता, तो कम से कम इसे निजी तौर पर परिवारों के साथ साझा किया जाए।

बता दें 12 जून 2025 को अहमदाबाद से लंदन जा रहा बोइंग 787-8 विमान टेकऑफ के तुरंत

बाद मेडिकल कॉलेज हॉस्टल पर गिर गया था। इस हादसे में 241 यात्री और 19 अन्य लोगों समेत कुल 260 लोगों की मौत हो गई थी। पीड़ित परिवारों ने पीएम मोदी को लिखे पत्र में एअर इंडिया की तरफ से मदद की कमी का आरोप लगाया। हादसे में अपनी मां को खोने वाली किंजल पटेल ने एअर इंडिया की वेबसाइट के इस्तेमाल में आ रही दिक्कतों का जिक्र किया, जहां पीड़ितों के सामान की पहचान करनी होती है।

उन्होंने कहा कि वेबसाइट पर 25,000 से ज्यादा सामानों की लिस्ट हैं, लेकिन तस्वीरें साफ नहीं हैं। इससे कुछ भी ढूंढ पाना या पहचान कर पाना नामुमकिन है। वहीं अपनी मां, भाई और बेटी को खोने वाले खेड़ा के रोमिन वोरा ने बताया कि डिजिटल साधनों की जानकारी न होने के कारण कई परिवारों को परेशानी हो रही है। उन्होंने कहा कि सिर्फ एक ईमेल आईडी है और जवाब आने में 15 दिन तक लग जाते हैं। गांव के कई लोग ईमेल इस्तेमाल करना भी नहीं जानते।

भगवान परशुराम भवन का शिलान्यास कार्यक्रम चढ़ा राजनीति की भेंट

अखाड़े में तब्दील हुआ मंच चले लात-घूंसे

झज्जर ।

झज्जर जिले के सेक्टर-9 में ब्राह्मण समाज द्वारा आयोजित भगवान परशुराम भवन का शिलान्यास कार्यक्रम पूरी तरह से राजनीति की भेंट चढ़ गया।

जिस मंच से समाज को एकता और शक्ति का संदेश दिया जाना था, वही मंच आपसी कलह और हंगामे का अखाड़ा बन गया।

हालात इतने बिगड़ गए कि पुलिस की मौजूदगी में ही नेताओं और समर्थकों के बीच जमकर लात-घूंसे चले, जिसके बाद आयोजकों को मजबूरन कार्यक्रम रद करना पड़ा। बता दें कि कार्यक्रम की शुरुआत तो काफी शांतिपूर्ण तरीके से हुई थी।

केंद्रीय मंत्री अरविंद शर्मा शिलान्यास पत्थर रखकर कार्यक्रम से रवाना हो चुके थे, लेकिन उनके जाने के कुछ ही देर बाद मंच पर मौजूद नेताओं के बीच किसी बात को लेकर कहासुनी शुरू हो गई।

फिर क्या था, देखते ही देखते विवाद इतना बढ़ गया कि मंच पर ही धक्का-मुक्की और मारपीट शुरू हो गई। इस दौरान कांग्रेस विधायक कुलदीप वत्स भी वहीं मौजूद थे।

युद्ध में अमेरिका-इजराइल की रणनीति असफल, ईरान ने दबाव को ताकत में बदला

ईरानी राजदूत ने कहा- अगर हम पर हमले हुए तो ''कुचल देने वाले हमले'' करेंगे

नई दिल्ली ।

दिल्ली में तैनात ईरानी राजदूत मोहम्मद फथाली ने अमेरिका और इजराइल के खिलाफ बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि मौजूदा युद्ध में अमेरिका और इजराइल की रणनीति असफल साबित हो रही है।

ईरानी राजदूत ने सोशल मीडिया पर लिखा कि दुनिया भर के कई थिंक टैंक्स के विश्लेषण से यह साफ हो रहा है कि यह अभियान 'रणनीतिक विफलता' की ओर बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि ईरान ने दबाव को सहन करते हुए उसे अपनी ताकत में बदल दिया है। फथाली ने यह भी कहा कि ईरान की सभ्यतागत ताकत उसे लंबे समय तक संघर्ष करने की क्षमता देती है और यही उसकी रणनीतिक बढ़त बन रही है।

इस बीच ईरान की सेना ने भी सख्त चेतावनी दी है। सैन्य प्रवक्ता ने कहा कि अगर अमेरिका ने हमले जारी रखे, तो जवाब में अमेरिकी और इजराइली ठिकानों पर 'कुचल देने वाले हमले' किए जाएंगे। यह चेतावनी खास तौर पर उन देशों के लिए भी है, जहां

अमेरिकी सैन्य ठिकाने मौजूद हैं। ईरान ने साफ कहा है कि ऐसे देश भी हमलों का निशाना बन सकते हैं। दरअसल, यह पूरा तनाव तब और बढ़ गया जब अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने ईरान के पुलों, बिजलीघरों और ऊर्जा ढांचे को निशाना बनाने की धमकी दी।

हिंद महासागर में 4.2 तीव्रता का आया भूकंप, जान-माल का नुकसान नहीं

वैज्ञानिक बोले-ऐसी हलचलें भूगर्भीय गतिविधियों का संकेत, निगरानी बनाए रखना जरुरी

नई दिल्ली ।

रविवार तड़के हिंद महासागर में 4.2 तीव्रता का भूकंप आया, जिसने क्षेत्र में भूगर्भीय हलचल पैदा की। राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र के मुताबिक यह भूकंप समुद्र तल से करीब 90 किलोमीटर की गहराई पर आया। सुबह के समय आए इस भूकंप से किसी प्रकार के जान-माल के नुकसान की सूचना नहीं है। विशेषज्ञों ने इसे सामान्य और कम तीव्रता वाला भूकंप बताया है, जिसके कारण किसी बड़े खतरे की संभावना नहीं बनी। साथ ही, किसी भी प्रकार की सुनामी चेतावनी भी जारी नहीं की गई है। हालांकि वैज्ञानिकों का मानना है कि समुद्र के अंदर होने वाली ऐसी हलचलें भूगर्भीय गतिविधियों का संकेत होती हैं, जिन पर लगातार निगरानी बनाए रखना जरुरी है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक भूकंप केवल सतह पर ही नहीं, बल्कि पृथ्वी के अंदर कई गहराइयों पर भी उत्पन्न होते हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भूकंपों को उनकी गहराई के आधार पर तीन श्रेणियों में बांटा जाता है। उथले भूकंप सतह से 70 किलोमीटर तक की गहराई में आते हैं, मध्यवर्ती भूकंप 70 से 300 किलोमीटर के बीच और गहरे भूकंप 300 से 700 किलोमीटर तक की गहराई में उत्पन्न होते हैं। वर्तमान भूकंप मध्यवर्ती श्रेणी में आता है, जो अपेक्षाकृत कम विनाशकारी होता है।

हिंद महासागर का क्षेत्र भूगर्भीय दृष्टि से अत्यंत सक्रिय है। यहां कई टेक्टोनिक प्लेटों की गतिविधियां लगातार चलती रहती हैं, जिसके कारण समय-समय पर भूकंप के झटके महसूस किए जाते हैं। यह क्षेत्र पृथ्वी की आंतरिक संरचना में हो रहे परिवर्तनों का एक अहम संकेतक भी है, जो वैज्ञानिकों के लिए अध्ययन का विषय बना रहता है।

इस क्षेत्र का इतिहास एक भयावह त्रासदी का गवाह भी रहा। 2004 में समुद्र के अंदर आए एक अत्यंत शक्तिशाली भूकंप ने व्यापक तबाही मचाई थी। उस समय उत्पन्न हुई विशाल सुनामी ने कई देशों के तटीय क्षेत्रों को प्रभावित किया और लाखों लोगों की जान चली गई। यह घटना इस बात की याद दिलाती है कि समुद्र के अंदर होने वाली हलचलें कभी-कभी अत्यंत विनाशकारी रूप भी ले सकती हैं।

वर्तमान भूकंप भले ही मामूली

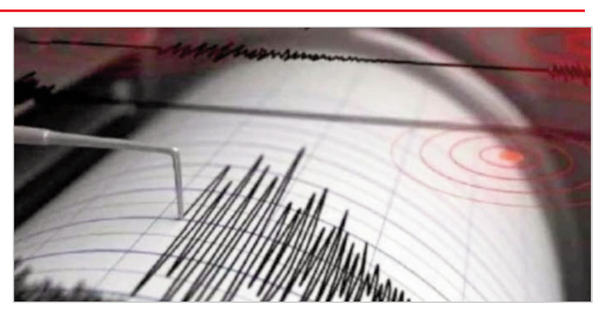

हो, लेकिन यह प्राकृतिक घटनाओं के प्रति सतर्क रहने की जरुरत को रेखांकित करता है। वैज्ञानिक संस्थाएं लगातार इन गतिविधियों पर नजर बनाए हुए हैं, ताकि किसी संभावित खतरे की स्थिति में समय रहते चेतावनी दी जा सके। इस प्रकार की निगरानी भविष्य में बड़े जोखिमों को कम करने में सहायक साबित होती है। भूकंप जैसी प्राकृतिक घटनाएं हमें यह सिखाती हैं कि प्रकृति के संतुलन को समझना और उसके अनुरूप तैयारी करना कितना अहम है।

खौफनाक साजिश, हिंदू युवाओं को ढाल बनाकर आतंकी मंसूबों को अंजाम देने की तैयारी

लखनऊ ।

उत्तर प्रदेश आतंकवाद निरोधी दस्ते (एटीएस) की गिरफ्त में आए संदिग्ध आतंकी शाकिब से हुई पूछताछ में एक अत्यंत चौंकाने वाला और संवेदनशील खुलासा हुआ है। जाँच में यह बात सामने आई है कि सीमा पार बैठे पाकिस्तानी हैंडलर्स ने भारत में दहशत फैलाने के लिए अपनी पारंपरिक रणनीति में बड़ा बदलाव किया है। एटीएस की पूछताछ में शाकिब ने बताया कि उसे अपने आकाओं से सीधे निर्देश मिले थे कि इस बार न तो शहादत का रास्ता चुनना है और न ही सुरक्षा एजेंसियों के हत्थे चढ़ना है। इसके बजाय, सुरक्षा घेरे में सेंध लगाने के लिए स्थानीय हिंदू युवकों को ढाल बनाकर आतंकी मंसूबों को अंजाम देने की योजना तैयार की गई थी। इस पूरे नेटवर्क का मास्टरमाइंड दुबई में बैठा आकिब बताया जा रहा है, जिसने सोशल मीडिया के जरिए युवाओं का ब्रेनवॉश कर उन्हें देश के खिलाफ युद्ध छेड़ने के लिए उकसाया। एटीएस ने इस मामले में मेरठ के साकिब उर्फ डेविल, अरबाब, और गौतमबुद्धनगर के विकास उर्फ रौनक व लोकेश उर्फ पपला पंडित को गिरफ्तार किया है। हैरानी की बात यह है कि इन युवकों को अरबाब के जरिए जोड़ा गया था और भारी पैसों का लालच देकर देश विरोधी गतिविधियों के लिए तैयार किया गया था। पहचान छिपाने के लिए शाकिब ने विकास का कोड नेम जाहिद और लोकेश का कोड नेम सलीम रखा था। एडीजी कानून-व्यवस्था अमिताभ यश के मुताबिक, आकिब लंबे समय से इंस्टाग्राम और टेलीग्राम जैसे प्लेटफॉर्म्स पर आधुनिक हथियारों के साथ अपनी तस्वीरें पोस्ट कर युवाओं को प्रभावित कर रहा था। शाकिब इस मॉड्यूल का मुख्य संचालक था, लेकिन वह रेकी के लिए लोकेश का सहारा लेता था। लोकेश के हिंदू होने का फायदा उठाकर उसे आसानी से प्रमुख धार्मिक स्थलों और संवेदनशील सैन्य प्रतिष्ठानों पर भेजा जाता था, ताकि किसी को उस पर शक न हो। इस तरह पहचान को ही सुरक्षा व्यवस्था में सेंध लगाने का हथियार बनाया गया। पूछताछ में यह भी पता चला है कि पाकिस्तानी हैंडलर्स सीधे शाकिब को गूगल लोकेशन भेजते थे। इसके बाद यह गिरोह उन जगहों पर जाकर वीडियो बनाता और वापस भेजता था, जिसके बदले उन्हें मोटी रकम दी जाती थी। इस मॉड्यूल ने उत्तर प्रदेश के कई रक्षा प्रतिष्ठानों, कैंट इलाकों और कुछ नामचीन धार्मिक नेताओं की सुरक्षा व्यवस्था की जासूसी कर ली थी। सुरक्षा एजेंसियों को अंदेशा है कि इस नेटवर्क से और भी लोग जुड़े हो सकते हैं, जिनकी तलाश में छापेमारी जारी है। फिलहाल, पकड़े गए आरोपियों के मोबाइल डेटा और फंडिंग के स्रोतों की गहराई से पड़ताल की जा रही है।

धनबाद में गैस रिसाव की चपेट में आने से 3 लोगों की मौत

धनबाद ।

झारखंड के कोयलांचल की नगरी धनबाद में दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है। मुनिडीह इलाके में लोहा चोरी करने की कोशिश के दौरान गैस रिसाव की चपेट में आने से 3 लोगों की मौत हो गई। शुरुआती जांच में पता चला है कि चोर एक भरे हुए गैस सिलेंडर को काट रहे थे तभी गैस के तेज रिसाव ने उनकी जान ले ली। पुलिस के अनुसार कुछ लोग इलाके में लोहे का कबाड़ चोरी करने के इरादे से घुसे थे। वहां एक गैस सिलेंडर रखा हुआ था जो पूरी तरह भरा हुआ था। चोरों ने जैसे ही सिलेंडर को काटना शुरू किया उसमें से गैस का भारी रिसाव शुरू हो गया। गैस की गंध इतनी तेज और जहरीली थी कि मौके पर मौजूद लोग तुरंत बेहोश होकर गिर पड़े। जिन्हें उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया। शहीद निर्मल महतो मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के अधीक्षक ने बताया कि अस्पताल में कुल 5 लोगों को लाया गया था। अस्पताल पहुंचने से पहले ही दो लोग दम तोड़ चुके थे। एक की इलाज के दौरान मौत- एक व्यक्ति की मौत इलाज के दौरान हुई। बाकी दो लोगों का उपचार जारी है लेकिन उनकी स्थिति नाजुक बनी हैं। धनबाद के एसएसपी ने आधिकारिक तौर पर तीन मौतों की पुष्टि की है। पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखकर जांच तेज कर दी है। पुलिस यह भी पता लगाने की कोशिश कर रही है कि क्या इस गिरोह में और भी लोग शामिल थे जो मौके से भागने में सफल रहे।

प्रयागराज में दर्दनाक सड़क हादसा, डंपर ने महिला को कुचला, मौके पर ही मौत, आक्रोशित भीड़ और पुलिस के बीच झड़प

प्रयागराज।

कोरांव थाना क्षेत्र में रविवार को एक दिल दहला देने वाला सड़क हादसा सामने आया, जिसमें एक तेज रफ्तार डंपर ने बाइक सवार महिला को कुचल दिया। हादसे में 45 वर्षीय फातिमा बेगम की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि उनके पति और बेटा बाल-बाल बच गए। जानकारी के अनुसार, घूरपुर थाना क्षेत्र के उभारी गांव निवासी मोहम्मद नौसे अपनी पत्नी फातिमा बेगम और 20 वर्षीय बेटे के साथ किसी निमंत्रण में शामिल होने के लिए कोरांव जा रहे थे। इसी दौरान कोरांव-मेजा मार्ग पर एक स्कैनिंग सेंटर के पास सामने से आ रहे तेज रफ्तार डंपर ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर लगते ही फातिमा बेगम सड़क पर गिर गईं और डंपर के पहियों के नीचे आ गईं, जिससे उनकी मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। हादसे के बाद घटनास्थल पर स्थानीय लोगों की भारी भीड़ जुट गई। घटना से आक्रोशित लोगों ने हंगामा शुरू कर दिया और सड़क पर विरोध प्रदर्शन करने लगे। स्थिति उस समय और तनावपूर्ण हो गई जब मौके पर पहुंची पुलिस से भीड़ की झड़प हो गई। हालांकि, पुलिस ने समझाइश और कड़ी मशक्कत के बाद हालात को नियंत्रण में लिया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा और आगे की कार्रवाई शुरू कर दी। मामले में कोरांव थाना प्रभारी निरीक्षक राकेश कुमार वर्मा ने बताया कि दुर्घटना में शामिल डंपर वाहन की पहचान कर ली गई है और जल्द ही चालक को गिरफ्तार कर लिया जाएगा। फिलहाल, मृतका के परिजनों की ओर से दी जा रही तहरीर के आधार पर मामला दर्ज किया जा रहा है। इस दर्दनाक हादसे ने इलाके में शोक और गुस्से का माहौल पैदा कर दिया है।